D—1440

'आज का अखबार तो आपने पढ़ा होगा ?'

मालती का सीधा सवाल सुनकर राधा देवी के चेहरे पर विषाद की काली छाया घिर आई और फिर एक दीर्घ नि:श्वास के साथ बोली—'तुम भी मेरे जख्मों में नश्तर चुभाने आई हो ?'

'मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है आंटी।' मालती बोली—'आप जानती हैं कि फूफा की किसी ने हत्या कर दी है और इस अपराध में पुलिस ने जय को गिरफ्तार कर लिया है।'

'मालूम है मुझे।' भारी और थकी-सी आवाज में राधा देवी ने कहा—'जय चाहे और कुछ भी कर दे लेकिन किसी की हत्या नहीं कर सकता—और वह भी अपने पिता की ? असम्भव। उसका दिल तो इतना कोमल है कि दूसरों के दुख से दुखी हो उठता है वह।'

'एक खास बात तो अपने नोट की होगी, कि सारी घटना उसी तरह घटी है जिस तरह बीस साल पहले घटी थी।' मालती बोली—'वे ही दो नकाबपोश···एक लम्बा···एक ठिगना···।'

—इसी उपन्यास में से

वेद प्रकाश काम्बोज
चन्द्रहार के चोर

दो शब्द

प्रिय पाठको,

डायमण्ड पाकेट बुक्स में लोकप्रिय जासूसी उपन्यासकार वेद प्रकाश काम्बोज का नवीनतम जासूसी उपन्यास 'चन्द्रहार के चोर' प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है।

यह लेखक का बहुत ही रोचक उपन्यास है—जिसे आप अवश्य पसन्द करेंगे।

यदि आप चाहते हैं कि हर माह इसी प्रकार के रोचक उपन्यास आपको घर बैठे प्राप्त होते रहें तो आप डायमण्ड पाकेट बुक्स की 'अपने घर में अपनी लायब्रेरी योजना' के सदस्य बन जाएं। हर महीने तीन पुस्तकें २४ रु० के स्थान पर २० रु० की वी० पी० द्वारा भेजी जाती हैं, डाक व्यय भी फ्री। आज ही ५/-रुपये सदस्यता शुल्क भेजें।

आशा है, आप भी लाखों पाठकों की तरह इस योजना से लाभ उठाएंगे।

—प्रकाशक

लेखक का पता—

वेद प्रकाश काम्बोज
IV/१६७०, महावीर ब्लाक,
भोलानाथ नगर,
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

चन्द्रहार के चोर

यह स्साला चोर किस मालदार छोकरी को फंसा लाया ?

होटल से बाहर निकलते हुए रिटायर्ड इंस्पेक्टर नारायण चौधरी की नजर जैसे ही पोर्टिको में रुकती टैक्सी से उतरते हुए उस नौजवान जोड़े पर पड़ी तो वह मन-ही-मन बड़बड़ा उठा।

पिछले ही साल पुलिस से रिटायर्ड होने के बाद उसने एक सिक्योरिटी सर्विस खोल ली थी और एक ही साल में दो अन्य शहरों पटना और कानपुर में उसकी ब्रांचें भी खोल ली थीं। हैड ऑफिस यहीं कलकत्ता में ही था।

आज वह कानपुर से आई एक पार्टी के साथ इस होटल में भोजन करने के साथ-साथ उसकी फैक्ट्री की सुरक्षा-व्यवस्था के बारे में भी बातचीत करने आया था। पार्टी को सन्तुष्ट करने और खाना खाने के बाद वह होटल के मुख्य द्वार से बाहर निकलने ही वाला था कि एक टैक्सी आकर रुकी और उसमें से वह नौजवान जोड़ा उतरता दिखाई दिया।

युवक को तो वह देखते ही पहचान गया—जवाहरातों और बहुमूल्य आभूषणों का शातिर चोर—रवि जो अपने आपको प्रिंस कहता है। उसके साथ की लड़की उसके लिए अपरिचित थी, फिर भी उसकी अनुभवी नजरों को यह पहचानने में दिक्कत नहीं हुई कि वह किसी ऊंचे घराने की है। उसके गले में चमकता-दमकता कीमती चन्द्रहार इस बात की गवाही दे रहा था कि वह न केवल किसी ऊंचे घराने की है, बल्कि बेहद अमीर और बहुत ही सम्पन्न परिवार की भी।

युवक की किसी बात पर खिलखिलाकर हंसती हुई युवती भीतर प्रविष्ट हुई। टैक्सी ड्राइवर को लापरवाही से एक बड़ा-सा नोट थमाकर युवक भी उसके साथ बात करता हुआ चल दिया। अनजाने में नारायण चौधरी पास के एक खम्भे की आड़ में हो गया।

वे दोनों आपस में बातें करते हुए उसके पास से गुजर गए। स्पष्ट लग रहा था कि युवक की बातों से युवती बेहद आनंदित हो रही थी।

इस बार तो साला बहुत ही मोटा हाथ मारने जा रहा है, सोचा नारायण चौधरी ने—हो सकता है कि इस अच्छी-भली लड़की की जिन्दगी भी खराब कर दे। अभी तो हंस रही है, लेकिन बाद में जिन्दगी भर सिर पर हाथ रखकर रोएगी।

उसके देखते-देखते जोड़ा रिसैप्शन पर पहुंचा और चाबी लेकर लिफ्ट की ओर बढ़ गया। हालांकि वह रिटायर हो चुका था, किन्तु भीतर बैठा पुलसिया स्वभाव उसे अपने आप ही रिसैप्शन की ओर ले गया।

'माफ कीजिये।' वह बोला—'अभी उस लड़की के साथ जो आदमी आपसे चाबी लेकर गया है, मुझे लगता है कि वह मेरा परिचित रवि है। क्या आप बताएंगे…।'

'जी हां, वे मिस्टर रवि कुमार ही हैं।'

'और उनके साथ वह युवती?'

'वे उनकी पत्नी हैं।'

'ओह, तो शादी कर ली उसने! क्या आप बताएंगे कि वे किस नम्बर में ठहरे हुए हैं?'

'कमरा नम्बर तीन सौ सोलह—तीसरी मंजिल।'

'हूं।'

नारायण चौधरी ने धीरे से सिर हिलाया। एक बार तो उसके जी में आया कि वह रिटायर हो चुका है, सो बेकार के पचड़े में क्यों पड़े? किन्तु फिर ध्यान आया कि वह खूबसूरत-सी लड़की एक बदमाश चोर के चंगुल में फंसकर अपना जीवन नष्ट कर लेगी। उसे उस चोर की असलियत बताकर सावधान करना उसका फर्ज बनता है।

उसके कदम लिफ्ट की ओर बढ़ गये।

□ □

तीन सौ सौलह नम्बर के कमरे के सामने पहुंचकर उसने दस्तक दी तो दरवाजा उसी युवती ने खोला। वह शायद कपड़े बदलने जा रही थी, क्योंकि अपने मुख्य जेवर उतार चुकी थी वह।

'मिस्टर रवि कुमार हैं ?'

'जी हां। आप कौन ?'

'रिटायर्ड इन्स्पेक्टर आफ पुलिस नारायण चौधरी।' उसने लड़की के चेहरे पर नजरें दौड़ाते हुए कहा—'आप शायद उनकी धर्म पत्नी हैं ?'

'जी हां।' युवती तनिक घबराकर बोली—'लेकिन वे बाथरूम गये हुए हैं।'

'मैं बाहर इन्तजार कर रहा हूं।'

'बाहर क्यों ? अन्दर आइये न।'

नारायण चौधरी भीतर प्रविष्ट हुआ। कमरे में एक नजर दौड़ाते हुए उसने ड्रेसिंग टेबल पर पड़े जेवरों को देखा और फिर पूछा—'शादी हो चुकी या होने वाली है ?'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यह है बेटी कि तुमने जवानी के जोश में या तो एक गलत कदम उठा लिया है या उठाने जा रही हो।' नारायण चौधरी बोला—'रवि को कब से जानती हो तुम ?'

'ज्यादा दिन से नहीं, पिछले महीने ही मुलाकात हुई है।'

'मुलाकात हुई है या शादी ?'

'शादी होने वाली है।'

'और शादी से पहले ही मिस्टर एण्ड मिसेज रवि कुमार इस होटल के कमरे में रह रहे हैं। वह भी इतने कीमती आभूषणों को साथ लिए हो तुम ?' नारायण चौधरी ने ड्रेसिंग टेबल पर पड़े जेवरात की ओर संकेत करते हुए कहा—'तुम्हारे मां-बाप ने इजाजत कैसे दे दी ?'

'आप कहना क्या चाहते हैं ?'

'रवि को बाहर आने दो। मुझे देखते ही उसके चेहरे पर जो भाव आएंगे, उन्हें देखकर ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि मैं क्या कहना चाहता हूं।'

'आप तो अपनी बातों से मुझे उलझन में डाल रहे हैं।

बताइये तो सही कि आप यह सब-कुछ क्यों कह रहे हैं ?'

'क्योंकि देखने में तुम एक भले और किसी बहुत ही सम्पन्न घर की लड़की लगती हो।'

'सो तो मैं हूं।'

'और शिक्षित भी हो ?'

'एम० ए० पास किया है मैंने।'

'फिर भी तुम इस बदमाश के जाल में फंस गईं।'

'क्या कह रहे हैं आप ?'

'तुम्हें शायद इस रवि की असलियत नहीं मालूम।' नारायण चौधरी ने बाथरूम के बन्द दरवाजे की ओर देखकर कहा—'यह एक पेशेवर शातिर चोर है—सजायाफ्ता भी। एक दिन यह तुम्हारे सारे गहने-जेवर समेटकर चलता बनेगा और तब तुम बैठी अपने भाग्य पर आंसू बहाती रहोगी।'

युवती कुछ कहती, उससे पहले ही दरवाजा खुला और युवक बाहर निकला।

'प्रिंस तुमने सुना, यह महाशय क्या कह रहे हैं ?' युवती एकदम युवक की ओर उन्मुख होकर बोली।

लेकिन युवक ठगा-सा नारायण चौधरी की ओर देख रहा था, फिर अपने को संयत करता हुआ बोला—'चौधरी मोशाय, आप और यहां !'

'क्यों, देखकर हैरानी हुई है ?' नारायण चौधरी उसे स्थिर नजरों से घूरता हुआ बोला—'मैंने तुमसे पिछली बार भी कहा था रवि कि इस रास्ते को छोड़ दो। जिस रास्ते पर तुम चल रहे हो, वह हमेशा जेल के दरवाजे पर जाकर ही खत्म होता है।'

'लेकिन आप यहां पहुंचे कैसे ?'

'जहां जुर्म होता है, वहां कानून किसी न किसी तरह पहुंच ही जाता है।'

'मैंने तो सुना था कि आप रिटायर हो चुके हैं।'

'सिर्फ आदमी रिटायर होते हैं, कानून कभी रिटायर नहीं होता। अगर कानून भी रिटायर हो जाए तो फिर तो तुम जैसे बदमाशों की बन आये।'

'आप खड़े क्यों हैं बैठिये न।' युवक मुस्कराकर बोला—फिर उसने युवती से कहा—'सुनो प्रिंसेस...।'

मत कहो मुझे प्रिंसेस—यू चीट—।' युवती बिफर कर बोली—'इस भले आदमी ने अगर मुझे तुम्हारी असलियत न बता दी होती तो तुमने तो मुझे तबाह कर दिया होता। प्रिंस, ऊंह ! कहां के प्रिंस हो तुम ?'

'तुम्हारे दिल की रियासत का।' युवक बोला—'अब यह बेकार का गुस्सा छोड़ो और मेहमान का कुछ चाय-पानी के द्वारा स्वागत करो।'

'अगर तुम फौरन इस कमरे को छोड़कर यहां से चले नहीं गये रवि, तो समझ लो कि तुम्हें हवालात का मेहमान बनने में देर नहीं लगेगी और लोहे की मजबूत हथकड़ियां तुम्हारे हाथों की शोभा बढ़ा रही होंगी।'

'आप गलत समझ रहे हैं चौधरी मोशाय—अब मैं एक शरीफ आदमी हूं और यह मेरी पत्नी···।'

'मत कहो मुझे अपनी पत्नी—यू चीट—तुमने मुझे धोखा दिया है। मेरे अरमानों का खून किया है तुमने। तुम्हें मुझसे नहीं, मेरे जवाहरातों से प्यार है—अंकल, मुझे इस शैतान के चंगुल से बचाइये।'

'फिक्र मत करो बेटी, अब यह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।'

'मगर मैं···।'

'इसे जेल भिजवाइये।' युवती युवक की बात बीच में ही काटकर बोली—'वहां अच्छी तरह चक्की पिसवाइये। तब इसे आटे-दाल का भाव मालूम हो जायेगा। ओह अंकल आपने इस बदमाश की असलियत बताकर मेरे ऊपर कितना बड़ा उपकार किया है, मैं बता नहीं सकती।'

'कम आन डार्लिंग, क्यों एक शरीफ आदमी को उल्लू बना रही हो। यह ठीक है कि पुलिस के साथ मेरा हमेशा छत्तीस का आंकड़ा बना रहा है, किन्तु चौधरी मोशाय मेरे मेहरबान हैं। न चाहते हुए भी इन्होंने हर बार मेरी मदद करने की कोशिश ही की है।'

'क्या मतलब ?' अब चौंकने की बारी नारायण चौधरी की थी। वह युवती को घूरता हुआ बोला—'यानी तुम्हें इसके बारे में सब-कुछ मालूम है ?'

जवाब में युवती हंस दी।

'इसे सब-कुछ मालूम है चौधरी मोशाय, बल्कि वह भी जो शायद मेरे बारे में पुलिस को भी नहीं मालूम।' रवि मुस्कराता हुआ बोला—'आप बैठिये तो सही।'

'यानी यह भी तुम्हारी सहयोगी है और तुम दोनों ही कोई मोटा हाथ मारने की तैयारी कर रहे हो?'

'ह… तो मार लिया है, अब तो हम हनीमून मना रहे हैं। डार्लिंग, तुम जरा रूम सर्विस से दो ठण्डी बीयर तो मंगाओ। चौधरी मोशाय आकर अगर मुंह जूठा किये बिना ही चले गये तो गृह-लक्ष्मी का ही अपमान होगा।'

'मजाक के लिये क्षमा कीजियेगा अंकल…।' युवती सलज्ज भाव से हंसती हुई बोली—'लेकिन आतिथ्य स्वीकार करके ही जाना होगा।'

'आखिर यह सब क्या चक्कर है?' भ्रमित से नारायण चौधरी ने कहा—'लगता है, यह छोकरी तुम्हारे बारे में सब-कुछ जानने के बावजूद भी मेरे सामने जान-बूझकर अनजान बनी हुई थी। शायद मुझे बेवकूफ बनाने के लिए।'

फोन पर रूम सर्विस को आदेश देने के बाद युवती बोली, 'नहीं अंकल, यह बात नहीं है, बल्कि आपने जिस तरह आकर मुझे चौंकाने की कोशिश की तो मैंने भी सोचा कि परिस्थिति के विनोद का आनन्द क्यों न उठा लिया जाए। अब आप दोनों बैठकर बातें कीजिये, तब तक मैं कुछ जरूरी चिट्ठियां लिख लूं अन्यथा प्रिंस तो किसी को पत्र लिखने का भी मौका नहीं देते थे।'

कहकर वह दूसरे कमरे में चली गई।

नारायण चौधरी के चेहरे पर उलझन के भाव देखकर रवि बोला—'आप बैठिये तो सही, मैं आपको सब-कुछ बताता हूं।'

नारायण चौधरी गद्देदार सोफे पर बैठ गया।

रवि भी उसके सामने बैठता हुआ बोला—'किस्सा भक्तपुर का है। कभी तो यह समुद्र किनारे का मामूली-सा गांव था; किन्तु अब लगभग महानगर का एक हिस्सा-सा ही बनता जा रहा है। महानगर हालांकि वहां से तीस मील दूर है, लेकिन फिर भी बहुत से रईस लोग वहां के समुद्र तटवर्ती मनोरम वातावरण से प्रभावित होकर अपनी कोठियां वहां बनवा रहे

हैं। पुराने गांव की जगह नई सम्पन्न बस्ती बस रही है, लेकिन न नई बस्ती अभी पूरी तरह से फैली है, न पुराना गांव ही पूरी तरह से समाप्त हुआ है। नये-पुराने का संगम-सा बना हुआ है अभी। हालांकि नयापन काफी तेजी से फैलता जा रहा है।'

रवि भक्तपुर के बारे में बता रहा था कि तभी बेटर बीयर इत्यादि लेकर आ गया। दो मगों में बीयर डालने के बाद एक नारायण चौधरी की ओर सरकाता हुआ रवि बोला—

'गनेशी को तो आप भूले नहीं होंगे—वही गनेशी, जिसे तीन साल पहले आपने एक जौहरी की दुकान में सेंध लगाते हुए पकड़ा था, लेकिन उसके वकील ने उसे बेदाग छुड़वा लिया था। भक्तपुर से उसी गनेशी का पत्र पहुंचा था मेरे पास। वह वहां ब्रेहन हाउस से चन्द्रहार उड़ाने के चक्कर में था। बीस लाख रुपये की कीमत का वह चन्द्रहार मिसेज ब्रेहन अपनी शादी की वर्षगांठ पर ही पहनती थी। उसी दिन उसे महानगर के बैंक से निकाला जाता था और अगले दिन फिर बैंक के लॉकर में वापिस रख दिया जाता था। रात की पार्टी में वे उसे पहनती थीं। यानी सिर्फ एक रात वह बहुमूल्य चन्द्रहार ब्रेहन हाउस में रहता था। उसी को उड़ाने की योजना बनाई थी गनेशी ने। लेकिन बेचारे की किस्मत खराब कि एक दिन बुरी तरह पीकर मोटर साइकिल पर आ रहा था कि स्पीड ब्रेकर दिखाई नहीं दिया और वह मोटर साइकिल से उछलकर नीचे जा गिरा। वजनी मोटर साइकिल टांगों पर गिरी तो एक टांग की हड्डी टूट गई। लिहाजा वह तो अब चारपाई पर लेटे रहने के अलावा और कुछ कर नहीं सकता था। सो उसने पत्र लिखकर मुझे बुलाया और चन्द्रहार चुराने के लिए कहा। मैंने सारी बातों को समझने के बाद इस नायाब मौके को छोड़ना अनुचित समझा। बस गनेशी की जगह मैं लग गया चन्द्रहार चुराने के चक्कर में।

▭ ▭

शादी की वर्षगांठ से एक दिन पहले आधी रात के समय मैं गनेशी की मोटर साइकिल लेकर ब्रेहन हाउस के निकट पहुंचा ताकि उसका एक बार अच्छी तरह से निरीक्षण करके इस बात का निश्चय कर सकूं कि अगले दिन मुझे क्या काम

किस ढंग से करता है। मोटर साइकिल मैंने ब्रेहन हाउस से काफी दूर एक जगह अन्धेरे में खड़ी कर दी थी और वहां से अपने को अन्धेरे में रखता हुआ अपनी मंजिल की ओर बढ़ा।

अभी मैं ब्रेहन हाऊस से कुछ कदम दूर ही था कि तभी मैंने एक छाया को चहारदीवारी पार करके बाहर की ओर कूदते देखा। मैं तुरन्त ही पास के एक पेड़ की आड़ में हो गया।

वह कोई लड़की थी, जो कूदने के साथ ही एकदम सम्हली और फिर तेजी से एक ओर को भाग गई। मैं अभी खड़ा सोच ही रहा था कि तभी मेरे देखते-देखते एक अन्य व्यक्ति चहार दीवारी पार करके बाहर कूदा। वह कोई युवक था जिसने बाहर कूदने के बाद तेजी से अपनी गरदन घुमाकर इधर-उधर देखा और फिर उस ओर भाग लिया, जिधर कि वह लड़की भागकर गई थी।

मैं अजीब उलझन में फंस गया। मुझसे पहले ही यहां कुछ ऐसा हो रहा था जिसकी मुझे जानकारी नहीं थी। ऐसे समय में अपना काम शुरू करना मुझे कुछ खतरनाक-सा लगा। हालांकि चारों ओर सन्नाटा था और ब्रेहन हाउस के भीतर भी कहीं कोई जाग का चिन्ह नहीं दिखाई दे रहा था, लेकिन फिर भी उस अप्रत्याशित घटना ने मुझे कुछ विचलित-सा कर दिया था और मुझे य ी बेहतर लगा कि फिलहाल वहां से टल जाना ही मुनासिब होगा।

मैं खामोशी के साथ वापस लौट आया।

▭ ▭

लेकिन उसी रात चार बजे मैं फिर ब्रेहन हाऊस के पास मौजूद था। इस बार सावधानी के नाते मैंने मोटर साइ-किल और भी अधिक दूर खड़ी की थी और अपना अन्दाज ऐसा बनाया हुआ था जैसे सुबह की सैर के लिए निकला हूं। शरीर पर जागिंग सूट और पैरों में जागिंग बूट थे।

सावधानी के साथ चहार दीवारी के निकट पहुंचकर मैंने भीतर की आहट ली और जब कोई आहट नहीं मिली तो फुर्ती के साथ चहार दीवारी पार करके भीतर कूद गया। कूदने के बाद भी कई क्षण तक बिल्ली की तरह अपने स्थान पर दुबका बैठा रहा, फिर जब कहीं कोई खतरा नहीं दिखाई दिया तो मैं सावधानी के साथ अपने जगह से हिला और आगे बढ़ा।

बिना कोई आवाज किए मैं इमारत के सामने बने बगीचे को पार करके आगे बढ़ा। अन्धेरे के बावजूद भी मुझे दूर से ही दिखाई दे गया कि इमारत का मुख्य द्वार खुला हुआ था। मैं तुरन्त अपनी जगह ठिठककर खड़ा हो गया। क्योंकि द्वार खुला होने का मतलब था कि कोई जाग गया है और वह बाहर भी निकल आया है। लेकिन मेरी चौकन्नी निगाहों को न कोई व्यक्ति दिखाई दिया न सतर्क कानों को कोई आहट सुनाई दी।

हालांकि दरवाजा खुला हुआ था, किन्तु इमारत के भीतर कहीं कोई रोशनी नहीं दिखाई दे रही थी।

अपनी अन्धेरे की अभ्यस्त आंखों को मैंने और भी तीक्ष्णता के साथ चारों ओर घुमाया। एक-एक वस्तु को ध्यानपूर्वक देखने की कोशिश करने लगा।

और फिर वह मुझे नजर आ गया।

कुछ दूरी पर एक व्यक्ति जमीन पर औंधा लेटा हुआ था। मुझे लगा जैसे वह सांप की तरह रेंगकर मुझे दबोचने की की कोशिश में था। मैं निःशब्द अपनी जगह खड़ा उसे देखता रहा। इस बात के लिए मैं बिलकुल तैयार था कि उसके कोई भी हरकत करते ही मैं वहां से भाग लूंगा, किन्तु उसने कोई हरकत नहीं की। वह जैसा पड़ा था, वैसा ही पड़ा रहा।

जब काफी देर तक भी उसने कोई हरकत नहीं की तो मैं सावधानी के साथ निःशब्द उसकी ओर बढ़ा। वह उसी प्रकार निश्चल पड़ा रहा। निकट पहुंचने पर मुझे उसकी गरदन में धंसा हुआ चाकू भी दिखाई दे गया जो जड़ तक घुसा हुआ था। यह जानने के लिए कोई ज्यादा अक्ल लड़ाने की जरूरत नहीं थी कि वह मर चुका था।

उसके पास ही प्लास्टिक का बड़ा-सा कैन रखा हुआ था। निकट ही एक अधखुदी कब्र थी जिसमें फावड़ा और बेलचा इत्यादि पड़े हुए थे।

वह लाश इस बात की द्योतक थी कि चन्द्रहार को चुराना मेरे नसीब में नहीं है। क्योंकि अब इस लाश की वजह से शादी की वर्षगांठ की पार्टी कैंसिल हो जाएगी और चन्द्रहार को बैंक लॉकर में से नहीं निकाला जाएगा।'

जहां आज शहनाइयों की आवाज गूंजने वाली थी, वहां मौत का विलाप गूंज गया है।'

उस हालत में वहां खड़े रहने का मतलब था, अपने को बेकार ही एक बड़ी भारी मुसीबत में फंसा लेना, जिससे मेरा कुछ भी लेना-देना नहीं था और कोई भी क्षण वहां नष्ट किए बिना मैं तेजी के साथ वापस लौट लिया।

फुर्ती के साथ उचककर चहार दीवारी पार की और दूसरी ओर कूद गया।

'कौन है ?'

तभी किसी का भारी स्वर गूंजा और एक तेज टार्च की रोशनी मेरे चेहरे पर पड़ी। तुरन्त अपने चेहरे को हाथों से छिपाता हुआ मैं तेजी के साथ वहां से भाग लिया। किसी के भारी कदमों की आवाज मुझे अपना पीछा करती हुई सुनाई दी, लेकिन वह जो कोई भी था, मेरी दौड़ का मुकाबला करने लायक नहीं था। दो-तीन गलियों में दौड़ने के बाद ही मैं उससे अपना पीछा छुड़ाने में कामयाब हो गया।

जब अपने को मैंने बिलकुल सुरक्षित पाया तो एक जगह रुककर अपनी फूली हुई सांस को काबू में किया। फिर तेजी के साथ उस जगह पहुंचा जहां मोटर साइकिल खड़ी की थी।

गनेशी के घर पहुंचा तो वह जाग रहा था और बिस्तर पर पड़ा सिगरेट फूंक रहा था।

'सब अच्छी तरह देख आया ?' उसने सिगरेट की राख कमरे के फर्श पर झाड़ते हुए पूछा।

'ऐसी की तैसी देख आया।' मैंने जूते उतारकर कपड़े बदलते हुए कहा—'सब गड़बड़ हो गया है। लगता है वह चन्द्रहार हमारे नसीब में नहीं है।'

'यह क्या कह रहा है तू ? तेरी चील-सी आंखें जिस चीज पर गड़ जाएं, वह अपने आप उड़कर तेरे पास पहुंच जाती है फिर ऐसी उल्टी बोली क्यों बोल रहा है तू ?'

'मैं तेरे को सच बता रहा हूं, कि वह चन्द्रहार अपने नसीब में नहीं है। अगर होता तो तेरा ही बेकार में एक्सीडेंट क्यों हो जाता ? टांग तुड़ाकर तू तो महीनों को बेकार हो गया न ?'

'मगर तू बेकार नहीं हुआ ? अच्छा-भला है। फिर काहे को हारे हुए जुआरी की-सी बोली बोल रहा है ? मेरे को बता तो सही कि हुआ क्या ?'

रवि ने बताया।

सुनकर गनेशी भी गम्भीर हो गया—'यह तो मोटा ही लफड़ा हो गया ?'

'अब उस चन्द्रहार को भूल जाओ। अगले साल देखेंगे अगर कोई शादी की वर्षगांठ मनाई गई तो।' कहने के साथ ही रवि अपनी अटैची पैक करने लगा।

'मगर तू यह क्या कर रहा है ?'

'अब मैं यहां एक मिनट भी नहीं रुकने वाला। जब खेल ही खत्म हो गया तो रुकने से फायदा ही क्या है ? वापिस जा रहा हूं मैं—अभी।'

'पागल हुआ है क्या ?' गनेशी अपनी चारपाई पर उचककर बोला—'बेकार फांसी का फंदा अपने गले में डालने जा रहा है ?'

'क्या मतलब ?'

'कत्ल हुआ है। कोई मामूली बात नहीं। इस मामले की पुलिस जोर-शोर से तफ्तीश करेगी। अगर कहीं उसे मालूम हो गया कि तू यहां था और कत्ल के फौरन बाद यहां से चला गया तो शक सीधा तुझ पर जायेगा। अपन लोग सजायाफ्ता मुजरिम हैं। बहुत समझ-बूझकर चलना चाहिए हमें।'

'कह तो तू ठीक रहा है।'

'मेरी मान, अभी एक-दो दिन यहीं रह। जब मामला कुछ ठण्डा पड़ जाए तो चला जाइयो।'

'लेकिन वह जो किसी ने मुझे वहां से दीवार फांदते देख लिया है।' चाय का पानी चढ़ाने के लिए उस लम्बे कमरे के दूसरे कोने में रवि गैस का स्टोव जलाते हुए बोला।

'तभी अपना चेहरा तो छिपा लिया था तूने। वैसे भी रुका रहेगा तो पुलिस यही समझेगी कि तेरा इस मामले से कोई ताल्लुक नहीं है। अगर होता तो कभी का भाग न लिया होता।'

'बात तो यार तू ठीक कह रहा है।' वह चाय का पानी स्टोव पर रखता हुआ बोला—'लेकिन लफड़ा कुछ मोटा ही हो गया है। कत्ल तो मुझे लगता है कि आधी रात को ही हो लिया था। तुझे बताया था न कि एक लड़की और एक लड़के को कूदता देखकर मैं वापिस लौट आया था।'

हम दोनों इसी बारे में बातें करते रहे। चन्द्रहार चुराने की

योजना तो ठप्प हो ही गई थी।

चाय पीने के बाद मैंने खिड़की के बाहर सिमटते अन्धेरे और धीरे-धीरे फैलते धुंधलके की ओर देखते हुए कहा, 'थोड़ा उजाला और फैल जाये तो जाकर पता करता हूं कि मामला था क्या ?'

'अबे क्यों आ बैल मुझे मार वाली बात कर रहा है।'

▭ ▭

गनेशी के मना करने के बावजूद भी मैं सात बजे के करीब त्रेहन हाउस के बाहर जमा भीड़ में शामिल था। एक उत्सुक दर्शक की भांति।

पुलिस वहां पहुंच चुकी थी।

गनेशी को खुद उसी के तर्कों से चुप कराकर वहां तक आया था। भीड़ की बातचीत से ही मुझे मालूम हो चुका था कि घर के मालिक जगत त्रेहन की हत्या हुई है। भीड़ की बातों से ही मैं हत्यारे के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश करने लगा और जल्दी ही मुझे मालूम हो गया कि हत्यारा मुझे ही समझा जा रहा है। क्योंकि भीड़ में चर्चा थी कि किसी कर्नल साहब ने हत्यारे को चहार दीवारी कूदकर भागते देखा था। उसे पकड़ने के लिए उसका पीछा भी किया था, किन्तु हत्यारा भागने में कामयाब हो गया।

लगा कि मुझे यहां नहीं आना चाहिए था, मैं धीरे-धीरे कदम हटाता हुआ पीछे हट ही रहा था कि अचानक मेरी नजर त्रेहन हाउस के पास बने उस पुराने से दुमंजिले मकान की बॉलकनी की ओर उठ गई जहां अधेड़ आयु की एक औरत जो निश्चित रूप से अपनी जवानी में बलाकी खूबसूरत रही होगी, वो एक अतीव सुन्दरी युवती के साथ खड़ी त्रेहन हाऊस के बगीचे की ओर ही देख रही थी, जहां पुलिस लाश के आस-पास अपनी आवश्यक कार्यवाही कर रही थी।

मैंने अपने जीवन में हजारों लड़कियां देखी थीं, किन्तु ऐसा गजब का सौन्दर्य कि लगे जैसे साक्षात् सुन्दरता की देवी ने ही शरीर धारण कर लिया हो कभी नहीं देखा था। उसकी हिरनी-सी बेचैन आंख तो अजीब-सी चुम्बकीय शक्ति से भरपूर थीं। मैं ही नहीं, भीड़ में से अन्य कई लोग उस ओर ही देखे जा रहे थे। शायद इस बात का आभास अधेड़ आयु की औरत को हो

गया था और वह युवती के साथ भीतर चली गई।

उन दोनों के जाने के बाद मुझे लगा कि मैं एक कल्पना-लोक में पहुंचकर वास्तविकता से दूर चला गया था। जबकि मुझे अब तक यहां से चला जाना चाहिए था। पहली बात तो यह थी कि गनेशी की बात मानकर यहां आना ही नहीं चाहिए था।

बहरहाल मैं वहां से हटने ही जा रहा था कि तभी अपने कंधे पर किसी के हाथ का स्पर्श पाकर चौंका।

देखा तो एक सिपाही था।

मैं तुरन्त वहां से भाग जाना चाहता था, किन्तु भागा नहीं। क्योंकि मैं जानता था कि ऐसा करने का मतलब था, अपने अनजाने अपराध की स्पष्ट स्वीकारोक्ति।

'क्या बात है?' मैंने अपने स्वर को भरसक संयत रखने का प्रयत्न करते हुए कहा।

'साहब बुला रहे हैं।' सिपाही ने निर्विकार भाव से ब्रेहन हाऊस की ओर संकेत करते हुए कहा।

मैं नहीं जानता कि वह सिपाही कब कैसे कहां से होकर मेरे पीछे आ गया था। बहरहाल, वह मेरे पास खड़ा था और उससे जान छुड़ाकर भागने का अर्थ था, उस जुर्म को स्वीकार करना जो कि मैंने नहीं किया था।

लिहाजा मैं बिना कोई विरोध किए उसके साथ चल दिया। वह मुझे ब्रेहन हाऊस के बगीचे में ले गया। पुलिस वाले अपना काम करने में व्यस्त थे। शायद लाश के आवश्यक फोटो-ग्राफ्स वगैरह ले लिए गए थे। क्योंकि जब मैं वहां पहुंचा तो इन्स्पेक्टर लाश की तलाशी ले रहा था। पास में ही सिवि-लियन कपड़ों में सफेद मूंछों वाला एक कड़ियल शरीर का बूढ़ा खड़ा था। उसका खड़े होने का ढंग ही बता रहा था कि वह फौज में रह चुका है।

'यही है इन्स्पेक्टर।' मुझे देखते ही वह बूढ़ा एकदम जोर से बोला—'बिलकुल यही है।'

लाश की जेब से निकले किसी कागज को पढ़ने की कोशिश करते हुए इन्स्पेक्टर ने सिर उठाकर मेरी ओर देखा और सिर्फ इतना कहा—'हूं।'

'जब मैं सुबह चार बजे के करीब सैर करने के लिए

निकला तो इसी आदमी को मैंने चहार दीवारी से बाहर कूदते देखा था।' वह बूढ़ा उत्तेजित-से स्वर में कह रहा था—'मैंने इसके चेहरे पर टार्च की रोशनी फेंकते हुए पूछा—'कौन है? तो यह अपना चेहरा छिपाता हुआ वहां से भाग लिया। मैं इसे पकड़ने के लिए इसके पीछे भागा, लेकिन यह साला हिरन की तरह कुलांचे भरता हुआ भाग गया।'

'हूं।' इन्स्पेक्टर ने मुझे ऊपर से नीचे देखते हुए कहा—'क्या नाम है तुम्हारा?'

'रवि कुमार?'

'कहां रहते हो?'

मैंने गनेशी के घर का पता बता दिया।

'क्या करते हो?'

'ट्रैवलिंग सेल्समैन हूं।'

'हूं, सुबह चार बजे यहां क्या कर रहे थे?'

'कुछ भी नहीं।' मैंने निर्भीक स्वर में कहा—'इन साहब को धोखा हुआ है। उस वक्त तो मैं आराम से सोया हुआ था।'

'सोया हुआ था माई फुट।' वह बूढ़ा अपनी मूंछों को फड़काता हुआ एकदम गरजकर बोला—'तुम चार बजे इस चहार दीवारी को कूदकर भागे थे।'

'यानी आप यह कहना चाहते हैं कि मैं उस वक्त यह कत्ल करके भाग रहा था जब आपने मुझे देखा?'

'यकीनन।'

'क्या मैं वाकई चेहरे से इतना बेवकूफ नजर आता हूं, जितना आप मुझे समझ रहे हैं कि कत्ल करने के बाद मैं यहां से और दूर भागने की बजाय तमाशा देखने के लिए फिर यहां हाजिर हो जाऊंगा, ताकि आप मुझे पहचानकर पुलिस से पकड़वा सकें?'

मेरे सवाल ने उस बूढ़े को कुछ बौखला-सा दिया था। क्योंकि वह अचकचाये-से स्वर में बोला—'यह मैं नहीं जानता लेकिन तुम्हीं थे जो चार बजे चहार दीवारी कूदकर भागे थे।'

'चार बजे चहार दीवारी कूदकर—तुकबन्दी अच्छी है। वैसे यह बात आप दावे से कह सकते हैं कि उस वक्त ठीक चार बजे थे।'

'हां, यही कोई [illegible] था।'

'यानी तुम इस बात से इन्कार करते हो ! तुम उस वक्त यहां मौजूद नहीं थे ?' इस बार इन्स्पेक्टर ने सवाल किया।

'जी, मैं उस वक्त यहां नहीं था।'

''तब कहां थे ?'

'अभी मैंने अर्ज किया न कि आराम से घर में सो रहा था। सुबह टहलने की गरज से बाहर निकला तो यहां भीड़ देखकर रुक गया। बस इतना ही कसूर है मेरा।'

'यह आदमी सरासर झूठ बोल रहा है इन्स्पेक्टर।' बूढ़ा अपनी बात पर जोर देता हुआ बोला—'उस वक्त यह यहीं था। मेरी आंखें धोखा कहीं खा सकतीं।'

'सच तो हम उगलवा लेंगे इससे कर्नल साहब। 'इन्स्पेक्टर ने कहा—'आप यह बताइये कि किसी रमला नाम की औरत को जानते हैं ?'

'रमला—नहीं तो, इस नाम की किसी औरत को मैं नहीं जानता।' कर्नल सिर हिलाकर बोला—'कौन है यह ?'

'मालूम नहीं।' इन्स्पेक्टर अपने हाथ के कागज को धीरे से हिलाकर बोला—'यह पत्र लाश की जेब से मिला है जिसे किसी रमला नाम की औरत ने लिखा है। आप मोहन साहब के काफी नजदीकी दोस्त हैं। मैंने सोचा, शायद आपको मालूम हो।'

'खत में क्या लिखा है ?'

'सुनिए।' और इन्स्पेक्टर ने पत्र पढ़कर सुनाया।

मेरे मधुरिम प्यार,

नहीं जानती तुम्हारी बेरुखी का कारण क्या है ? क्यों अब तुम मेरे खतों का जवाब नहीं देते। फोन पर भी नहीं मिलते। मुझे बताओ तो सही कि ऐसी कौन-सी भूल मुझसे हो गई, जिससे तुम नाराज हो गए। मैंने तो सपने में भी तुम्हारे अलावा किसी और के बारे में नहीं सोचा। मेरे प्राण केवल तुम्हारी याद में धड़कते हैं। किन्तु लगता है तुम्हारा मतवाला मन किसी और की ओर आकर्षित हो गया है, कहीं कोई अन्य तो हम लोगों के बीच नहीं आ गई है। विश्वास रखो, अगर कोई और हम लोगों के बीच

आ गई तो मैं कुछ कर बैठूंगी। तुम्हें भी जान से मार दूंगी और खुद भी मर जाऊंगी। यह शायद मेरे नारी मन की कमजोरी है जो मुझे यह सब अन्ट-शन्ट सोचने के लिए विवश कर रही है। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम सिर्फ मेरे हो और मेरे ही रहोगे। अब तो बहुत दिन हो गए हैं मिले हुए। किसी भी तरह मौका निकालकर एक बार मिल तो लो। तुम्हें देखने को मेरी प्यासी अंखियां तरस गई हैं। जवाब जरूर देना कि कब मिल रहे हो।

तुम्हारी और सिर्फ तुम्हारी

रमना !

सुनने के बाद कर्नल ने अपने सिर को अजीब ढंग से झटका दिया—'यह खत श्रेहन की जे . से मिला है ?'

'जी हां, अभी तो मैंने आपके सामने निकाला है ?' इन्स्पेक्टर बोला।

'मैं नहीं मान सकता।' कर्नल इन्कार में अपना सिर हिलाता हुआ बोला—'श्रेहन ऐसा आदमी नहीं था। वह तो औरतों के बारे में बात तक करनी पसन्द नहीं करता था। मैं तो अक्सर उससे कहा करता था कि अगर उसे औरतों के जिक्र से इतनी ही नफरत है तो उसने शादी कैसे कर ली ?'

तभी एक औरत इमारत से बाहर निकलकर आई। उसके ब ों से ही मा लूम देता था कि वह नौकरानी है।

'मालकिन होश में आ गई हैं ?' उसने आते ही कहा।

'तुम्हारा नाम क्या है ?' इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'सुलोचना ?'

'यहां कब से काम करती हो ?'

'पन्द्रह साल हो गए साहब।' औरत अपनी सूती साड़ी का पल्लू ठीक करते हुए बोली—'काठमांडू से इन लोगों के साथ ही यहां आई हूं।'

'रहती भी यहीं हो ?'

'जी हां, सबसे ऊपर की बरसाती में रहती हूं।'

'रात यहां क्या हुआ था ?'

'मुझे तो कुछ नहीं मालूम। मैं तो बरसाती में सो रही थी। जब कर्नल साहब के जोर-जोर से बोलने की आवाज सुन-कर मैं नीचे आई।'

'हां।' कर्नल ने कहा—'जब इस बदमाश को पकड़ने में मैं नाकामयाब रहा तो यहां लौटकर आया। बहार दीवारी का लोहे का दरवाजा तो भीतर से बन्द था। इसलिए कूदकर अन्दर गया ताकि चोर के बारे में त्रेहन को सावधान कर दूं, लेकिन भीतर मुझे त्रेहन की लाश पड़ी मिली और इमारत का मुख्य दरवाजा खुला हुआ था। लिहाजा मैं शोर मचाता हुआ भीतर घुसा। मेरी आवाज सुनकर सबसे पहले सुलोचना ही नीचे आई। उसके बाद हम दोनों ने ही बेडरूम में मिसेज त्रेहन को बेबस पड़ी पाया। उसके हाथ-पैर मजबूती से बंधे हुए थे। मुंह पर भी कपड़ा बन्धा हुआ था ताकि बेचारी चीख न सके। यह मिसेज त्रेहन के बन्धन खोलने लगी और मैंने फोन द्वारा इस मामले की सूचना आपको दी। लेकिन आपने यहां पहुंचने में देर काफी लगाई।'

इन्स्पेक्टर ने कर्नल की बात का कोई जवाब न देकर मेरी ओर संकेत करते हुए सुलोचना से पूछा—'इस आदमी को पहचानती हो?'

'नहीं तो।' वह मुझे गौर से देखने के बाद बोली—'कौन है यह?'

'रमखा कौन है?' इन्स्पेक्टर उसके सवाल को नजर अन्दाज करके बोला।

'मुझे नहीं मालूम।'

'यह नाम पहले कभी नहीं सुना है?'

'जी नहीं।'

कुछ सोचने के बाद इन्स्पेक्टर ने फिर सवाल किया—'त्रेहन साहब से मिलने के लिए औरतें आती रहती थीं क्या?'

'कल रात एक आई थी।'

'किस वक्त?'

'यही कोई नौ-साढ़े नौ का टाइम होगा।'

'दिन का या रात का?'

'रात का।'

'कौन थी वह?'

'यह तो मैं नहीं जानती।' सुलोचना बोली—'वे उससे नीचे के ड्राइंगरूम में ही मिले थे और कुछ देर बाद बिना चाय पिलाए ही उन्होंने उसे विदा कर दिया। इस पर मुझे आश्चर्य

हुआ था, क्योंकि उनका आदेश था कि घर में जो भी मेहमान आए वह बिना चाय पिए नहीं जाना चाहिए। इसलिए मैं बिना आज्ञा के ही चाय बनाकर ले आई थी, लेकिन जब मैं ड्राइंग-रूम में चाय की ट्रे लेकर प्रविष्ट हुई तो मैंने देखा कि वे उसे बाहरी दरवाजे से बाहर निकाल रहे थे।'

'उस औरत का चेहरा देखा था तुमने ?'

'जी नहीं।'

'उन दोनों के बीच की कई बातचीत सुनी थी ?'

'मैंने मालिक को यह कहते सुना था—'ठीक है···ठीक है···अभी तुम जाओ यहां से। मैं फिर बात करूंगा तुमसे।'

तब इंस्पेक्टर के चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कराहट उभर आई जब उसने बूढ़े कर्नल की ओर देखा। जिसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे हुए थे।

फिर इंस्पेक्टर ने पलटकर सुलोचना की ओर देखा और पूछा, 'जवाब में उस औरत ने कुछ कहा ?'

'जी नहीं, हां उसकी सिसकियों की आवाज जरूर सुनी थी मैंने।'

'अच्छा सुलोचना, उसके अलावा कुछ और स्त्रियां भी ब्रोहन साहब से मिलने के लिए आती थीं ?'

'जी नहीं, वह पहली और आखिरी औरत थी जो उनसे मिलने के लिए आई थी।' सुलोचना ने दृढ़ स्वर में कहा। फिर उसे जैसे कुछ याद आया हो—'हां, एक बार राधा देवी भी आई थीं। उन्हें भी मालिक ने बड़ी बेरुखी के साथ बाहर से बाहर ही विदा कर दिया था।'

'राधा देवी कौन ?'

'वही चुड़ैल जो पड़ोस में रहती है।'

सुलोचना ने मुंह बिचकाकर साथ के उस मकान की ओर संकेत किया जहां कुछ देर पहले बॉलकनी में मैंने उस अधेड़ औरत और अपूर्व सुन्दर युवती को खड़े हुए देखा था।

'न जाने उस डायन ने मालिक पर क्या जादू डाल दिया है कि वे बिलकुल ही बदल गए।' वह कह रही थी—'काठमांडू में तो वे ऐसे न थे। वहां तो वे पराई औरतों की छाया से भी दूर भागते थे। यहां आकर न जाने उन्हें क्या हो गया।'

'ब्रोहन साहब पड़ोस के मकान में जाते भी थे ?'

'जी हां कई बार मैंने उन्हें उस घर से बाहर निकलते देखा; वह भी रात के वक्त।'

'शर्म नहीं आती तुम्हें अपने उस मालिक पर लांछन लगाते हुए जो कि मर चुका है।' बूढ़ा कर्नल एक दम तैश में आकर बोला—'औरतों के मामले में ब्रेहन जैसा पारसा आदमी तो मैंने जिन्दगी में नहीं देखा।'

'मैं भी यही समझती थी।' सुलोचना बोली—'जब तक काठमांडू में रहे, तब तक उनके चाल-चलन पर कभी किसी को कोई उंगली उठाने का मौका नहीं मिला। किन्तु यहां आने के बाद न जाने इस चुड़ैल पड़ोसिन ने उन पर क्या जादू कर दिया कि वे पूरी तरह बदल गए।

'मिसेज ब्रेहन को इस बात की जानकारी थी?'

'मेरे स[illegible] कभी कोई बात नहीं हुई। लेकिन पता तो उन्हें होगा ही। पिछले कुछ समय से वे बड़ी चुप-चुप और परेशान-सी रहती थीं जैसे कोई बात उन्हें भीतर ही भीतर खाए जा रही हो। मन-ही-मन घुली जा रही थी वे। इससे तो हम लोग काठमांडू में ही अच्छे थे।'

'वहां से यहां कब आए तुम लोग?'

'करीब आठ महीने हो गए। वहां मालिक की तबियत कुछ खराब रहने लगी थी। डाक्टर ने समुद्र किनारे रहने की सलाह दी और उन्होंने यहां कोठी बनवा ली।'

'राधा देवी को कब से जानते हो तुम लोग?'

'यहीं आने के बाद इससे मुलाकात हुई। आखिर बिलकुल जड़ में ही तो मकान है। न जाने कैसा जादू चलाया कि मालिक को पूरी तरह अपने वश में कर लिया। और, वह जो लड़की है उसकी, उसने छोटे मालिक पर डोरे डाल रखे हैं।'

'छोटे मालिक कौन?'

'यह शायद जय के बारे में बात कर रही है।' कर्नल बोला—'ब्रेहन का इकलौता लड़का। महानगर में रहता है। बहुत ही शरीफ और होनहार लड़का है। जहां तक शिल्पा का सवाल है….।'

'शिल्पा कौन?'

'राधा देवी की लड़की।' कर्नल ने बताया—'उन मां-बेटियों को मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूं। दोनों ही बहुत

भली है। जय शिल्पा से प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता है। लेकिन त्रेहन को यह रिश्ता मंजूर नहीं था। हालांकि मैंने भी जय के कहने पर त्रेहन को समझाने की बहुत कोशिश की थी, किन्तु त्रेहन इस मामले में किसी की भी सुनने को तैयार नहीं था।'

'तो जय महानगर में रहता है? इंस्पेक्टर ने कर्नल की बात सुनने के बाद सुलोचना से पूछा।

'जी हां।'

'यहां अक्सर आता रहता है?'

'जी हां—हफ्ते में एक बार तो आते ही हैं।'

'किसी खास दिन?'

'शनीचर को आते हैं और सोमवार की सुबह चले जाते हैं।'

'पिछली बार कब आया था?'

'शनीचर को ही आए थे।'

'और सोमवार को चला गया था?'

'जी नहीं, इतवार को ही चले गए थे।'

'क्यों?'

'बाप-बेटे में कुछ झगड़ा हो गया था?'

'किस बात पर?'

'यह तो मुझे नहीं मालूम।' सुलोचना ने कनखियों से कर्नल की ओर देखते हुए कहा—'लेकिन छोटे मालिक ने बड़े तैश में आकर अपने कपड़े अपनी अटैची में डाले और दनदनाते हुए चले गए।'

इंस्पेक्टर ने उससे कुछ और सवाल भी किए और जब अन्य कोई मतलब की बात जानने में असफल रहा तो वह बोला—'ठीक है तुम जाओ, हम आते हैं।'

उसके बाद इंस्पेक्टर ने एक सिपाही से कहा—'फोटो वगैरह का काम पूरी तरह से खत्म हो जाए तो लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा देना और इस तेजाब के कैन के साथ-साथ फावड़ा और बेलचा भी अपने कब्जे में कर लेना। मगर हां···लाश अभी यहीं रहने देना···मिसेज त्रेहन से भी तो शिनाख्त करानी है।,

फिर वह मुझसे बोला—'तुम मेरे साथ आ ो। आप भी

आइए कर्नल साहब।'

मैं खामोशी के साथ इंस्पेक्टर के पीछे चल दिया। मेरे पीछे दो सिपाही और वह बूढ़ा कर्नल था।

इमारत के भीतर इंस्पेक्टर के पीछे प्रविष्ट होता हुआ मैं सोच रहा था कि लाश के पास उस तेजाब से भरे कैन के रखे होने का क्या मतलब ?'

▭ ▭

मिसेज त्रेहन एक भरे-पूरे शरीर की लम्बी-सी औरत थी। हालांकि उस समय वह काफी कमजोर और निढाल-सी लग रही थी किन्तु फिर भी हमें देखकर उसने उस पलंग परसे उठने का प्रयास किया, जिस पर वह लेटी हुई थी।

'आप लेटी रहिए।' इंस्पेक्टर ने कहा—मिसेज त्रेहन लेटी तो नहीं किन्तु पलंग के सिरहाने के साथ कमर टिकाकर बैठ गई।

कर्नल और इंस्पेक्टर पलंग के निकट ही दो कुर्सियों पर बैठ गए थे। मैं और मेरे दाएं-बाएं दोनों सिपाही खड़े रहे। किसी ने हमें बैठने के लिए कहा भी नहीं।

'अब कैसी हैं भाभी ?' कर्नल ने धीरे से आगे की ओर झुकते हुए पूछा।

'अब तो ठीक हूं।' मिसेज त्रेहन ने एक फीकी-सी हंसी के साथ कहा—'आप अगर मौके पर न पहुंच गए होते तो मैं अभी तक रस्सियों से बंधी हुई होती।'

'कौन लोग थे वो ?' इंस्पेक्टर ने प्रश्न किया।

'मालूम नहीं, दो नकाबपोश थे।' मिसेज त्रेहन ने बताया। —'एक कुछ कद में छोटा था और दूसरा लम्बा, खा-पीकर हम लेट गए थे। मैं तो तभी सो गई थी लेकिन त्रेहन साहब कोई किताब पढ़ते रहे थे। मुझे नहीं मालूम कि मैं कितनी देर सोई या रात का कौन-सा वक्त था। किन्तु कुछ अजीब-सी आवाजों ने मुझे चौंका दिया। मैंने देखा कि लम्बे वाला नकाबपोश त्रेहन साहब की गरदन से चाकू सटाए हुए था और छोटे कद का नकाबपोश मेरे ऊपर झुका कह रहा था—'खबरदार, अगर गले से जरा भी आवाज निकाली तो तुम्हारे पति की जान चली जाएगी।' मैं चाहकर भी भय के मारे चीख न सकी। छोटे वाले नकाबपोश ने सबसे पहले मेरे मुंह में कपड़ा ठूंसकर बांधा।

फिर मेरे हाथ-पैर भी मजबूती के साथ बांध दिए। उसके बाद वे दोनों ब्रेहन साहब से किन्हीं कागजातों के बारे में पूछते रहे। ब्रेहन साहब ने कहा भी कि उनके पास कोई कागजात नहीं हैं। लेकिन वे फिर भी उनके साथ जोर-जबर्दस्ती करते रहे। उसके बाद, वे दोनों नकाबपोश उन्हें खींचकर बाहर के कमरे में ले गए। वहां से उन लोगों की आपस में बातें करने की आवाजें तो आती रहीं किन्तु स्वर इतने अस्पष्ट थे कि मैं उनकी बातें न सुन सकी। फिर कदमों की आहटों से मैंने जाना कि वे तीनों नीचे उतरकर चले गए। आहटों से ही मैंने यह भी जाना कि वे ब्रेहन साहब को जबर्दस्ती खींचकर अपने साथ ले गए थे। उसके बाद सन्नाटा छा गया। मुझे नहीं मालूम कि मैं बंधी-बंधी सो गई या अज्ञात भय के कारण बेहोश हो गई थी। जब आंख खुली तो पाया कि सुलोचना मेरे बन्धन खोलने के बाद मेरी हथेलियां सहला रही थी। ब्रेहन साहब तो कुशल से हैं न? कहां हैं वो?'

'ब्रेहन साहब की हत्या कर दी गई है।'

'हे, मेरे भगवान!' मिसेज ब्रेहन अपने हाथों में मुंह छिपाकर रो पड़ी—,आखिर उन हत्यारों ने उन्हें मार ही डाला।'

वहां एक गहरा सन्नाटा छाया रहा जिसमें मिसेज ब्रेहन के रोने की आवाज ही गूंजती रही।

फिर कुछ देर बाद अपने को संयत करती हुई वह बोली—'मुझे उनके पास ले चलिए। मैं उन्हें देखना चाहती हूं।'

तभी बाहर से किसी के तेज कदमों की आहट सुनाई दी और अगले ही क्षण एक बौखलाया-घबराया-सा नौजवान भीतर प्रविष्ट हुआ।

मैंने उस नवयुवक को देखा तो चौंक गया। क्योंकि यह वही था, जिसे कल आधी रात के समय मैंने चहार दीवारी से बाहर कूदते देखा था।

▭ ▭

'जय तुम काठमांडू नहीं गए?' युवक को देखते ही मिसेज ब्रेहन ने पूछा। फिर उसके जवाब का इन्तजार किए बिना ही बोली—'चलो, खैर अच्छा ही हुआ।'

बौखलाया घबराया-सा युवक बोला—'लेकिन यह सब क्या हो गया मम्मी···किसने डैडी की हत्या कर दी?'

मुझे लगा कि युवक कुछ ज्यादा ही नाटक करने की कोशिश कर रहा है।

'मैं भी नहीं जानती बेटे कि कहां से ये मुसीबत का पहाड़ हम पर आ टूटा।' मिसेज ब्रेहन ने भारी गले से कहा—'लेकिन जय, तुम्हारे डैडी ने तो तुम्हें फौरन काठमांडू चले जाने के लिए कहा था। तुमने उनके आदेश की अवज्ञा कैसे कर दी ?

'मैं यही जानने के लिए तो आया था मम्मी कि आखिर मुझे इस तरह अचानक काठमांडू क्यों भेजा जा रहा है ? लेकिन यहां आकर···।'

'अच्छे बच्चे अपने बड़ों के आदेश की वजह नहीं पूछा करते सिर्फ उनका पालन किया करते हैं।' मिसेज ब्रेहन ने कहा और फिर एक दीर्घ नि:श्वास के साथ बोली—'खैर, अब तो वे ही नहीं रहे फिर शिकायत करने का भी क्या लाभ।'

न जाने क्यों मुझे मां-बेटे की वह बातचीत कुछ अजीब और बेतुकी-सी लगी। लेकिन फिर भी मैं खामोश खड़ा सुनता रहा। क्योंकि मैं जानता था कि जिस मुसीबत में मैं फंस गया हूं, उसमें से मुझे मेरी खामोशी ही शायद निकालने में सहायक होगी।

मां-बेटे की बातचीत के बीच इंस्पेक्टर ने दखल-अंदाजी करते हुए पूछा—'आपको काठमांडू किसलिए जाने के लिए कहा गया था मिस्टर जय ?'

'मुझे खुद नहीं मालूम।' जय बोला—'कल डैडी का फोन पहुंचा था मेरे पास, उन्होंने मुझसे कहा था कि जिस प्लेन का भी टिकट मिले मैं उसमें सवार होकर काठमांडू पहुंच जाऊं। इससे पहले कि मैं कुछ पूछ पाता, उन्होंने सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया।'

'यानी आपको नहीं मालूम कि आपको काठमांडू क्यों भेजा जा रहा था ?'

'इस बारे में उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया था।' जय ने कहा—'लेकिन मेरा अनुमान है कि शायद वहां का काम सम्हालने के लिए मुझे भेजा जा रहा था।' आखिर हमारा वर्षों पुराना व्यवसाय तो वही है। यहां आकर काम तो हमने दस-साल शुरू किया है। वे इसीलिए मुझे वहां भेजना चाहते थे न मम्मी ?'

'हां बेटे, तुमने सही अनुमान लगाया है। वे इसीलिए वहां भेजना चाहते थे।' मिसेज ब्रेहन ने धीरे से कहा—'लेकिन अब तो वे ही नहीं रहे। अब क्या होगा?'

'हिम्मत न हारो भाभी।' कर्नल ने दिलासा-सा दिया—'ऐसे समय में अगर तुम ही टूट गईं तो फिर यह बेचारा जय क्या करेगा?'

'मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा भाई साहब कि मैं क्या करूं?' मिसेज ब्रेहन ने फफकते हुए कहा—'मुझे तो चारों ओर अन्धेरा नजर आ रहा है। आज हमारी शादी की सालगिरह थी और आज ही यह...।'

वाक्य पूरा किए बिना ही मिसेज ब्रेहन और जोर से फफककर रो उठी।

कर्नल सांत्वना देने लगा मिसेज ब्रेहन को।

इंस्पेक्टर ने जय की ओर उन्मुख होकर प्रश्न किया—'आपको हत्या के बारे में कैसे पता चला?'

'अभी-अभी जैसे ही यहां पहुंचा तो मुझे पता चला। लाश देखी तो भी यकीन नहीं आया कि किसी ने उनकी हत्या कर दी है। वे तो ऐसा देवता स्वरूप व्यक्ति थे कि जिन्दगी में उन्होंने कभी किसी का बुरा नहीं किया।'

'आप इस वक्त कहां से आ रहे हैं?'

'शहर से, सुबह साढ़े पांच बजे वाली ट्रेन से चला था जो काफी देर से आऊटर सिग्नल पर ही रुकी रही—उसके बाद स्टेशन से सीधा यहीं आ रहा हूं।'

'आप शहर से यहां ट्रेन से ही आते-जाते हैं?'

'जी नहीं, तकरीबन तो मैं कार का इस्तेमाल करता हूं। हां, कभी किसी वजह से कार नहीं ला सका किसी खराबी के कारण तो फिर ट्रेन से सफर करता हूं।'

इंस्पेक्टर जय से सवाल करता रहा और मैं सोच रहा था कि यह आदमी कितनी सफाई से झूठ बोल रहा है। कल रात अपने यहां होने के बारे में कोई जिक्र नहीं कर रहा बल्कि कुछ और ही साबित करने के चक्कर में लगा हुआ है।

अचानक ही मैंने अपने कान सतर्क करके फिर से उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुननी शुरू कर दीं। क्योंकि इंस्पेक्टर जय से पूछ रहा था—'मैंने सुना है कि आमतौर से आप यहां शनिवार

को आते हैं और सोमवार को चले जाते हैं ?'

'जी हां, सही सुना है आपने ?'

'लेकिन पिछली बार आप सोमवार तक नहीं रुके बल्कि इतवार को ही वापिस चले गए थे।'

'जी हां, पिछली बार मैं इतवार को ही वापिस चला गया था।'

'क्यों ?'

'दरअसल उस दिन डैडी से मेरी कुछ कहा सुनी हो गई थी जिससे मेरा मूड उखड़ गया और मैं वापिस लौट गया।'

'कहा-सुनी हुई थी या झगड़ा हुआ था ?'

'बाप-बेटे के बीच झगड़ा कैसा ?' थोड़ी बहुत कहा-सुनी तो हो ही जाती है। क्योंकि किसी भी बाप को अपने जवान बेटे के सारे तौर-तरीके तो पसन्द नहीं आते—सो कभी-कभार कोई तकरार हो जाए तो उसे झगड़ा तो नहीं कहा जा सकता।'

'झगड़ा न सही बहरहाल तुम्हारी अपने डैडी के साथ तकरार तो हुई थी न ?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

'जी हां।'

'वजह क्या थी ?'

जवाब देने से पहले जय क्षण भर के लिए झिझका फिर, बोला—

'मैं शिल्पा से शादी करना चाहता हूं और डैडी को वह मंजूर न था।'

'क्यों ?'

'कारण तो उन्होंने नहीं बताया लेकिन वे इसके लिए इजाजत देने को कतई तैयार न थे। बस इसी बात को लेकर कुछ कहा-सुनी हो गई थी।'

'और तुम गुस्से में अपना सूटकेस उठाकर चल दिए।'

'जी हां ?'

'यह शिल्पा कौन है ?'

'हमारे पड़ोस के मकान में रहती है।'

'राधा देवी की बेटी ?'

'जी ?'

'रमला कौन है मिस्टर जय ?'

'रमला—कौन रमला ?'

'यही तो मैं आपसे जानना चाहता हूं।'

'मुझे नहीं मालूम।'

'मिसेज त्रेहन, क्या आप रमला नाम की किसी औरत को जानती हैं?' इंस्पेक्टर ने मिसेज त्रेहन को सम्बोधित कर के सवाल किया।

'जी नहीं—कौन है यह रमला?'

'यही जानने की तो मैं कोशिश कर रहा हूं। उसका पत्र मिस्टर त्रेहन के नाईट गाऊन की जेब से बरामद हुआ है।'

इंस्पेक्टर कोई और सवाल करता, उससे पहले ही फिर किसी के भारी कदमों की आहट सुनाई दी और एक स्थूलकाय दक्षिण भारतीय भीतर प्रविष्ट हुआ।

▭ ▭

मालूम हुआ कि आगन्तुक का नाम राघवन था और वह मृतक त्रेहन का प्राइवेट सैक्रेट्री था।

'आपको हत्या की सूचना कैसे मिली?' इन्स्पेक्टर ने राघवन से प्रश्न किया।

'मुझे कर्नल चोपड़ा ने सूचना दी थी।'

इन्स्पेक्टर ने कर्नल की ओर देखा तो उसने जवाब दिया, 'जी हां, आपको फोन करने के बाद मैंने मिस्टर राघवन और जय को भी सूचना देने के लिए फोन किए थे। मिस्टर राघवन तो मुझे मिल गये थे, किन्तु जय के यहां किसी ने फोन नहीं उठाया। शायद वह वहां से चल चुका था।'

राघवन से कुछ इधर-उधर के सवाल पूछने के बाद इंस्पेक्टर ने सीधा सवाल किया—'आप किसी रमला नाम की औरत को जानते हैं मिस्टर राघवन?'

'जी नहीं—कौन है?'

'यही जानने की कोशिश तो कर रहे हैं हम।' इन्स्पेक्टर बोला—'शायद आपके आफिस में काम करने वाली किसी महिला कर्मचारी का नाम हो रमला।'

'सॉरी इन्स्पेक्टर।' राघवन ने जवाब दिया—'हमारे आफिस में कोई महिला कर्मचारी काम नहीं करती। मिस्टर त्रेहन का स्पष्ट निर्देश था कि आफिस में किसी भी महिला कर्मचारी को न रखा जाए।'

'कोई विशेष कारण?'

'यह तो मिस्टर त्रेहन ही बता सकते थे।'

'वैसे आपके विचार में मिस्टर त्रेहन रसिक तबियत के आदमी थे या बिलकुल शुष्क?'

'अगर आपका ध्यान औरतों की तरफ है तो मैं कहूंगा कि बिलकुल शुष्क।' राघवन ने दृढ़ स्वर में कहा—'मिसेज त्रेहन के अलावा उन्होंने कभी किसी अन्य औरत में कोई दिलचस्पी नहीं ली। दिलचस्पी की तो बात क्या, वे बाहरी औरतों से बात तक करना पसन्द नहीं करते थे।'

'मैं न कहता था कि त्रेहन इस तरह का आदमी नहीं है।' कर्नल ने एकदम जोरदार शब्दों में कहा—'वह सुलोचना की बच्ची बेकार ही उस गरीब पर तोहमत लगाए जा रही है।'

इन्स्पेक्टर ने कर्नल की बात को नजरअन्दाज करते हुए राघवन से पूछा—'राधा देवी को जानते हैं आप?'

'जी नहीं। कौन है यह?'

'त्रेहन हाऊस के बिलकुल साथ वाले मकान में रहती है।'

'रहती होगी।'

'शिल्पा को जानते हैं?'

'जी नहीं।'

'राधा देवी की बेटी है वह।'

'होगी।'

'मिस्टर जय उससे शादी करना चाहते हैं और मिस्टर त्रेहन को यह रिश्ता मंजूर नहीं था।' इन्स्पेक्टर बोला—'इस मामले को लेकर बाप-बेटे के बीच पिछले इतवार को झगड़ा भी हुआ था।'

'हो सकता है।' राघवन ने निर्विकार-से स्वर में कहा—'मिस्टर त्रेहन मुझसे अपने घरेलू मामलों के बारे में कोई बातचीत नहीं किया करते थे। किन्तु यह बात अब मेरी समझ में आ गई है कि वे मिस्टर जय को काठमांडू क्यों भेजना चाहते थे।'

'यानी आपको मालूम है कि उन्होंने जय को काठमांडू जाने का आदेश दिया था।'

'जी हां, कल जब जय के पास उनका फोन पहुंचा तो जय ने मुझसे बात की थी। मेरी समझ में नहीं आया कि आज शादी की सालगिरह मनाई जाने वाली थी और इस खुशी के मौके

पर बेटे को शामिल करने बजाय विदेश भेज रहे हैं।'

'लेकिन अब आप कारण समझ गए हैं।'

'शायद।'

'और वह कारण क्या हो सकता है मिस्टर राघवन ?'

'मेरी समझ में तो जय साहब को काठमांडू भेजने के पीछे मिस्टर त्रेहन की यही मंशा थी कि इन्हें शिल्पा से दूर कर दिया जाए।' राघवन बोला—'यह बात तो समझ में आती है, किंतु यह समझ में नहीं आता कि इतनी-सी बात से उन्होंने जय साहब को अपनी वसीयत से अलग क्यों कर दिया ?'

'क्या मतलब ?' इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'मुझे मालूम हुआ है कि मिस्टर त्रेहन ने अपनी वसीयत बदलकर अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति मिसेज त्रेहन के नाम कर दी है। पहले यह सब दोनों के नाम थी।'

'यानी मिस्टर जय और मिसेज त्रेहन के ?'

'जी हां।'

'वसीयत बदल दी गई है यह आपको कैसे मालूम हुआ ?'

'श्रीनिवास से।' राघवन बोला—'वे मिस्टर त्रेहन के वकील भी हैं और दोस्त भी। जब कर्नल चोपड़ा ने हत्या की सूचना मुझे दी तो मैंने श्रीनिवास को फोन किया। तभी उसने मुझे बातों-बातों में यह सब बताया ?'

इन्स्पेक्टर ने मिसेज त्रेहन की ओर उन्मुख होकर पूछा—'आप बता सकती हैं कि मिस्टर त्रेहन ने ऐसा क्यों किया ?'

'मैं क्या बता सकती हूं ?' मिसेज त्रेहन ने जवाब दिया—'वे अपनी इच्छा के मालिक थे। हालांकि मैंने उन्हें ऐसा करने से बहुत मना किया था।'

इन्स्पेक्टर अगला सवाल करता, उससे पहले ही जय बोल पड़ा—'मगर इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि वसीयत किसके नाम है। मम्मी के नाम हो या मेरे—बात तो एक ही है।'

'कानून की नजरों में फर्क पड़ता है बेटे।' मिसेज त्रेहन ने भर्राई-सी आवाज में कहा—'शायद इन्स्पेक्टर साहब को यह बात मालूम हो गई है कि मैं तुम्हारी सौतेली मां हूं।'

'मां भी कहीं सौतेली होती है मम्मी।' जय बोला—'जन्म नहीं दिया तो क्या हुआ। पाल-पोसकर इतना बड़ा तो तुमने ही किया है। तुम मेरे लिए सगी से भी बढ़कर हो।'

'थैंक्यू बेटे—मुझे तुम पर गर्व है।'

मां-बेटे के बीच की बात खत्म हुई तो इंस्पेक्टर ने राघवन से पूछा—'हां तो मिस्टर राघवन, आप तो मिस्टर त्रेहन के काफी नजदीक थे। क्या पिछले दिनों आपने उनमें कोई खास परिवर्तन महसूस किया था?'

'जी हां, पिछले कुछ समय से वे काफी परेशान और चिन्तित से रहते थे।'

'क्यों?'

'यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन मेरा ख्याल है कि शायद उन्हें ब्लैकमेल किया जा रहा था।'

'इस बारे में उन्होंने आपसे कोई बात की थी?'

'जी नहीं, मैंने बताया है न कि वे कभी अपने निजी अथवा घरेलू मामलों के बारे में मुझसे बातचीत नहीं करते थे।

'फिर आप इस नतीजे पर कैसे पहुंचे?'

'यह नतीजा नहीं इन्स्पेक्टर सिर्फ मेरा सन्देह है, जिसे अनुमान कहना ज्यादा बेहतर होगा।'

'किन्तु यह अनुमान आपने किस आधार पर लगाया?

'पिछले कुछ महीनों में ही चार लाख रुपए बिना हिसाब के निकाले गए हैं, जिनके बारे में कुछ नहीं मालूम कि मिस्टर त्रेहन ने वह रुपया क्यों निकाला और कहां खर्च किया?'

'क्या मिस्टर त्रेहन रुपया आपसे पूछकर खर्च करते थे?'

'जी नहीं। इसकी उन्हें कोई जरूरत नहीं थी।' राघवन बोला—'लेकिन मिस्टर त्रेहन उन आदमियों में से थे, जो न कंजूस थे न फिजूल खर्च। वे अपने द्वारा खर्च किये गये एक-एक नये पैसे का हिसाब रखते थे और वह हिसाब मेरी जानकारी में रहता था। लेकिन यह चार लाख रुपए जो उन्होंने पिछले महीनों में विभिन्न रकमों के रूप में निकाले थे, उन्होंने कहां और कैसे खर्च किए? मुझे नहीं मालूम। इसी से मुझे शक होता है कि उन्हें ब्लैकमेल किया जा रहा था। हां, अगर मिसेज त्रेहन को मालूम हो कि वह रुपया उन्होंने कहां खर्च किया तो दूसरी बात है। कम से कम मुझे तो नहीं मालूम।'

'आपको उन रुपयों के खर्च किए जाने के बारे में कुछ मालूम है मिसेज त्रेहन?'

'जी नहीं, लेकिन मुझे अपने पति पर पूरा भरोसा है। वह रुपया उन्होंने कहीं भी खर्च किया हो किन्तु निश्चित रूप से सही जगह ही खर्च किया होगा।'

इन्स्पेक्टर कुछ और प्रश्न पूछने जा रहा था कि तभी मिसेज त्रेहन ने कहा—'अगर आपके सवाल खत्म हो गए हों तो मैं अपने पति को देखना चाहूंगी।'

'बस एक मिनट।' इन्स्पेक्टर बोला। फिर मेरी ओर संकेत करते हुए उसने कहा—'मिस्टर राघवन! क्या इस आदमी को पहचानते हैं आप ?'

'जी नहीं।' राघवन ने इन्कार में सिर हिलाते हुये कहा—'कौन है यह ?'

'कभी इस आदमी को मिस्टर त्रेहन के आसपास आते-जाते देखा हो ?'

'जी नहीं, मैं तो इस आदमी को जिन्दगी में पहली बार देख रहा हूं।'

'और मिस्टर जय आप ? आप पहचानते हैं इस आदमी को ?'

'जी नहीं।'

'मिसेज त्रेहन, आप गौर से देखिए इस आदमी को।' इन्स्पेक्टर बोला—'उन दोनों नकाबपोशों में से किसी की कद-काठी इससे मिलती-जुलती थी क्या ?'

मिसेज त्रेहन की नजरें मुझ पर जम गईं। उस समय तो मुझे सांप सूंघ गया, जब लगा कि वह इकरार में सिर हिलाने जा रही है। तब मेरी जान में जान आई जब उसने इन्कार में सिर हिलाते हुए कहा—'जी नहीं, यह उन दोनों में से कोई भी नहीं है।'

'लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यही आदमी चहारदीवारी फांदकर भागा था। कर्नल चोपड़ा ने जोरदार शब्दों में कहा।

'चहार दीवारी फांदकर ?' जय एकदम चौंककर बोला, फिर अचानक ही हंसते हुए बोला, 'अरे रहने दीजिए अकल ! आपको धोखा हुआ होगा कोई और···मेरा मतलब है कि कोई बिल्ली वगैरह कूदी होगी···।'

'तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो जय ?'

'नहीं अंकल, ऐसी गुस्ताखी मैं कैसे कर सकता हूं।' बौखलाया-सा जय संयत होने की कोशिश करता हुआ बोला, 'अन्धेरे में धोखा हो जाना कोई बड़ी बात नहीं। फिर आप उस दिन कह भी तो रहे थे कि आपको कुछ कम दिखाई देता है, चश्मा लगवाना चाहते हैं।'

'वह मैं पढ़ने का चश्मा लगवाने की बात कर रहा था।' कर्नल चोपड़ा ने क्रुद्ध स्वर में कहा—'मेरी दूर की नजर अब भी बड़ी तेज है।'

'मैं इससे कब इन्कार कर रहा हूं।' जय एकदम सम्भलकर बोला—'जब आपने देखा है तो ठीक ही देखा होगा।'

'लेकिन तुम्हें मेरी बात पर शक करने का साहस कैसे हुआ?'

'मैं आप पर शक नहीं कर रहा अंकल—बस, इतना कह रहा था कि मामला बहुत नाजुक है। कहीं ऐसा न हो कि आपकी गवाही से कोई निर्दोष फांसी के फंदे पर पहुंच जाए।'

जय की बात से कर्नल को झटका-सा तो लगा लेकिन फिर भी वह दृढ़ स्वर में बोला—'बिलकुल यही था—हां, इस वक्त इसके कपड़े जरूर बदले हुए हैं। लेकिन था यही।'

'खैर, इसका फैसला तो बाद में कर लेंगे।' इन्स्पेक्टर बोला—'पहले तो मिसेज त्रेहन को लाश के पास ले चलते हैं।'

हम लोग फिर इमारत से बाहर आए और उस जगह पहुंचे जहां लाश पड़ी हुई थी। जय मिसेज त्रेहन को सहारा देकर वहां तक लाया था।

लाश को देखते ही मिसेज त्रेहन के चेहरे पर अविश्वास के से भाव उभरे और वह एक हृदय-विदारक चीख कंठ से निकालती हुई पछाड़ खाकर उसके ऊपर गिर पड़ी।

▭ ▭

कर्नल चोपड़ा और जय बेहोश मिसेज त्रेहन को इमारत के भीतर ले गए। इस बारे में जब इंस्पेक्टर को कोई सन्देह न रहा कि वह लाश जगत त्रेहन की ही है तो उसने उसे पोस्टमार्टम के लिए भिजवाने का इन्तजाम किया।

उसी समय बाहरी दरवाजे के सामने एक टैक्सी आकर रुकी और उसमें से कंधे पर एक सफारी बैग लटकाए तथा हाथ में एक बड़ा-सा अटची केस थामे एक युवती उतरकर भीतर

आई। उसकी अस्त-व्यस्त-सी पोशाक और बिखरे बालों को देखकर लगता था, जैसे वह किसी लम्बे सफर से आ रही हो।

लड़की ने एक नजर आश्चर्य के साथ वहां के माहौल को देखा और फिर उसने इंस्पेक्टर से पूछा—'यह त्रेहन हाऊस ही है न।'

'जी हां।' इंस्पेक्टर ने उसका ऊपर-नीचे तक निरीक्षण करतेहुए संक्षिप्त-सा जवाब दिया।

'तब यहां पुलिस किसलिए?' लड़की ने सवाल किया—'क्या कोई चोरी वगैरह हो गई?'

'मिस्टर त्रेहन का किसी ने कत्ल कर दिया है।'

'क्या-क्या कह रहे हैं आप?'

'कल रात किसी ने मिस्टर त्रेहन की हत्या कर दी है।'

'ओह माई गाड!'

सूटकेस लड़की के हाथ से निकलकर जमीन पर गिर पड़ा। तभी उसकी नजरें इमारत के दरवाजे की ओर गईं और वह चिल्लाई—'जय ''क्या यह लोग सच कह रहे हैं कि किसी ने फूफा की हत्या कर दी?'

'मालती?' जय उसे देखते ही तेज कदमों से आगे की ओर बढ़ता हुआ बोला—'तुम कब आईं?'

'बस अभी आ रही हूं।' मालती बोली—'लेकिन यह मैं क्या सुन रही हूं?'

'हां मालती, तुमने ठीक ही सुना है।' जय विषादपूर्ण स्वर में बोला—'कल रात किसी ने डैडी को मार डाला।'

'मगर क्यों? क्या दुश्मनी थी उनसे किसी की?'

'अभी कुछ पता नहीं चला। पुलिस तहकीकात कर रही है।

'फूफी कहां हैं?'

'अन्दर हैं। डैडी की लाश देखकर बेहोश हो गई थीं। बड़ी मुश्किल से होश में आई हैं।' जय ने कहा—'लेकिन तुम बिना कोई सूचना दिए अचानक कैसे आ गईं। खबर कर दी होती तो तुम्हें कोई लेने न पहुंच जाता।'

'मैंने सोचा था कि शादी की सालगिरह के अवसर अचानक पहुंचकर सबको सरप्राइज दूंगी। लेकिन यहां तो सरप्राइज मेरा ही इन्तजार कर रहा था। मगर यह सब हुआ कैसे?'

वे दोनों बातें करते हुए इमारत की ओर बढ़ रहे थे कि इंस्पेक्टर ने टोका—'एक मिनट मिस मालती ?'

वे दोनों ठिठक कर रुक गए।

'लगता है आप कहीं लम्बे सफर से आ रही हैं ?'

'जी हां, मैं सीधी काठमांडू से आ रही हूं।'

'काठमांडू से।' इंस्पेक्टर ने जय की ओर देखते हुए पूछा—'जहां कि आप कल जाने वाले थे ?'

'जी हां।' जय बोला—'मालती मेरी ममेरी बहन है। मेरे मामा काठमांडू में ही रहते हैं।'

'काठमांडू से आप कब चली थीं ?' इंस्पेक्टर ने मालती से पूछा।

'आज सुबह के ही प्लेन से चली थी और अब महानगर एयरपोर्ट से सीधी टैक्सी करके यहां आ रही हूं।'

इंस्पेक्टर ने उससे कुछ और भी सवाल किए जिससे मालूम हुआ कि मालती का जन्म काठमांडू में ही हुआ था और वह पहली बार ही यहां आई है, क्योंकि उसके फूफा अपनी शादी की साल गिरह धूमधाम से मनाते थे और उसका विश्वास था कि यहां आने के बाद भी वह परम्परा चालू रहेगी। पन्द्रह दिन पहले मिस्टर मोहन का फोन गया था मालती के पिता जय-नारायण के पास, जिसमें उन्हें शादी की सालगिरह में सम्मि-लित होने के लिए निमंत्रित किया गया था। आवश्यक कार्य के कारण जय नारायण तो न आ सके किन्तु मालती अकेले ही चली आई।

जब इस जानकारी के अलावा कोई और जानकारी हासिल न कर सका इंस्पेक्टर तो उसने मेरी ओर संकेत करते हुए पूछा—'इस आदमी को पहचानती हैं आप ?'

मालती ने मुझे इस तरह से घूरा, जैसे चिड़ियाघर में किसी जानवर को देख रही हो। फिर बोली—'जी नहीं—मगर यह है कौन ?'

किन्तु इंस्पेक्टर ने उसकी बात का कोई जवाब न देकर मुझसे कहा—'तुम मेरे साथ आओ।'

▭ ▭

इंस्पेक्टर मुझे अपने साथ लेकर पड़ोस के मकान पर गया। दरवाजा उसी अधेड़ औरत ने खोला जिसे मैंने ऊपर

बॉलकनी में खड़े देखा था उस अपूर्व सुन्दरी के साथ।

'राधा देवी आपका ही नाम है?'

'जी हां।'

'क्या हम अन्दर आ सकते हैं या आप यहीं खड़े-खड़े बात करना पसन्द करेंगी?'

राधा देवी दरवाजे में से एक ओर को हट गई और हम दोनों भीतर प्रविष्ट हुए। मकान बाहर से जितना पुराना दिख रहा था अन्दर से उससे भी अधिक पुराना था। दीवार जगह-जगह से उखड़ी हुई थी और छत की कड़ियां लगभग गल-सी चुकीं थीं। बल्कि एक कोने की छत तो कुछ नीचे को झुक भी आई थी। लेकिन कमरे में जितना भी संक्षिप्त सामान था, वह सब करीने और सफाई से सजा हुआ था।

मैंने पहली बार राधा देवी को गौर से देखा और पाया कि वह उससे भी कहीं अधिक खूबसूरत थी जितनी कि मुझे दूर से दिखाई दी थी। अगर पारसी जगत ब्रेहन उस पर आशिक हो गया हो तो कोई ताज्जुब नहीं। उस बुढ़ाती हुई मेनका के सौंदर्य में अभी भी इतने गजब का आकर्षण था कि वह जगत ब्रेहन जैसे विश्वामित्रों के मन चलायमान कर सके।

एक पुराने से सोफे पर जिस पर साफ कवर चढ़ा हुआ था, हम दोनों बैठ गए। मेरा ख्याल था कि इंस्पेक्टर शायद मेरे बैठने पर आपत्ति प्रगट करे किन्तु उसने ऐसा कुछ नहीं किया।

राधा देवी हमारे सामने बैठ गई।

मेरी नजरें उस अपूर्व सुन्दरी शिल्पा को ढूंढ रही थीं लेकिन वह मुझे कहीं नजर नहीं आई। शायद भीतर के किसी कमरे में होगी।

'यह तो आपको पता लग ही गया होगा राधा देवी कि कल रात किसी ने आपके पड़ोसी मिस्टर जगत ब्रेहन की हत्या कर दी है।'

'जी हां, मुझे ही क्या सारी बस्ती को पता लग चुकी है यह बात।'

'आप कुछ बता सकती हैं कि यह काम किसका हो सकता है?'

'उनके परिवार के लोगों को किस पर सन्देह है?' राधा देवी ने पलटकर सवाल किया।

इंस्पेक्टर ने उसके सवाल को नजरअंदाज करते हुए कहा —'सुना है कि मिस्टर ब्रेहन अक्सर आपके यहां आया करते थे ?'

'आप किस ब्रेहन की बात कर रहे हैं ? क्योंकि बद-किस्मती से पड़ोस के मकान में दो-दो ब्रेहन रहते हैं।'

'फिलहाल तो मैं जगत ब्रेहन की बात कर रहा हूं।' इंस्पेक्टर बोला—'क्या वे अक्सर आपके यहां आते रहते थे ?'

'जी हां, तीन-चार बार आए हैं वे हमारे यहां।'

'दिन में या रात में ?'

'रात में।'

'दिन में कभी नहीं आए वो यहां ?'

'जी नहीं।'

'क्यों ?'

'इसका जवाब तो वे ही दे सकते थे कि दिन में हमारे यहां क्यों नहीं आते थे। किन्तु आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि वे हमारे यहां कभी भी रात को नौ बजे के बाद नहीं आए और यहां कभी दस मिनट से ज्यादा रुके भी नहीं।'

'इसका मतलब है कि वे कोई खास बात ही करने के लिए आते होंगे ?'

'जी हां ?'

'क्या मैं जान सकता हूं कि वह खास बात क्या थी ?'

'दरअसल वह शिल्पा और जय को लेकर परेशान थे।'

'क्यों ?'

'क्योंकि यह दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हैं और जय शिल्पा से शादी करने की जिद पकड़े हुए था जबकि मिस्टर ब्रेहन इस रिश्ते के खिलाफ थे। वे यहां मुझ पर जोर डालने के लिए आते थे कि मैं शिल्पा को लेकर यहां से कहीं दूर चली जाऊं।'

'इसके लिए उन्होंने कुछ रकम देने की भी पेशकश की थी ?'

'जी हां।'

'कितनी ?'

'वे मेरी मुंहमांगी रकम देने के लिए तैयार थे। किन्तु इसकी नौबत ही नहीं आई, क्योंकि मैंने उनका प्रस्ताव अस्वीकार

कर दिया था।' राधा देवी ने कहा—'आप नहीं समझ सकते इंस्पेक्टर कि एक गरीब विधवा औरत के लिए जिसके एक खूबसूरत और जवान बेटी भी हो, जिन्दगी गुजारनी कितनी मुश्किल होती है। लोक निन्दा से तो वह बच ही नहीं सकती न ?'

'क्या आप जय और शिल्पा की शादी के लिए स्वीकृति दे चुकी हैं ?' इंस्पेक्टर ने पूछा।

'कौन मां है जो इस रिश्ते से इंकार करेगी। जय एक सुन्दर और सुशील लड़का है। खानदान भी अच्छा है। लेकिन दुनिया में चाहने भर से तो कुछ नहीं हो जाता। मैं शिल्पा को हमेशा यही समझाती रही कि वह आकाश-कुसुम तोड़ने का प्रयत्न न करे। इसमें सिवाय आंसुओं के और कुछ हाथ नहीं लगेगा। मगर जवानी ऐसी नादान होती है कि अक्ल की बात वह समझना ही नहीं चाहती। वह गरीबी और अमीरी के भेद को नहीं मानती। जब कि सच्चाई यह है कि गरीबी और अमीरी का कभी गंठजोड़ हो ही नहीं सकता। अगर हठधर्मी से कभी कर भी लिया गया तो परिणाम दुख के अलावा और कुछ नहीं निकलेगा।'

'कल रात आपके पड़ोस के मकान में कुछ नकाबपोश घुस गए थे।' इंस्पेक्टर ने सवाल किया—'इस बारे में कोई जानकारी है आपको ?'

'सिर्फ इतनी ही जितनी कि अन्य लोगों को है।' राधा देवी ने कहा—'उससे ज्यादा हम कुछ नहीं जानतीं।'

'लेकिन आपका मकान तो बिलकुल जड़ में लगा हुआ है। पड़ोस में होने वाली घटनाओं का आभास तो आपको लग ही जाता होगा ?'

'मुझे पड़ोसियों के मामले में ताक-झांक करने की आदत नहीं है।' राधा देवी ने कहा—'और जब से शिल्पा और जय वाला चक्कर चला है, तब से मैं और भी सावधान हो गई हूं। जरा सोचिए तो, बिना किसी बात के अगर इतनी बदनामी है तो कहीं कुछ सच्चाई होती तो हम लोगों के क्या हाल होते ?'

'यानी रात वहां जो कुछ भी घटा, उसके बारे में आपको कोई जानकारी नहीं।'

'जी नहीं, सुबह जब पुलिस आई तभी हमें इस बात का

पता चला।'

'उससे पहले जब कर्नल चोपड़ा ने पड़ौस में शोर मचाया था....।'

'उसका भी हमें नहीं पता।'

'अच्छा, आप रमला नाम की किसी औरत को जानती हैं ?'

'जी नहीं।'

'शायद शिल्पा जानती हो।'

शिल्पा को भीतर से बुलाया गया। इंस्पेक्टर ने उससे भी कुछ सवाल किए, लेकिन कोई नई बात मालूम नहीं कर सका। मैं तो उसकी मोहिनी सूरत को देखते हुए सोच रहा था कि इस अनमोल हीरे को जय ने पहले ही अपने लिए सुरक्षित कर लिया है। किन्तु इसमें उसका भी क्या दोष ? उस दिव्य सौंदर्य को देखकर कौन काफिर अपना ईमान कायम रख सकता था।

अन्य सभी व्यक्तियों की तरह वे दोनों मां-बेटी भी न किसी रमला नाम की औरत को जानती थीं और न मुझे पहचानती थीं।

▭ ▭

'अब बताओ बेटे कि तुम असल में कौन हो और सुबह चार बजे वहां क्या कर रहे थे ?' पुलिस स्टेशन में पहुंचने के बाद इन्स्पेक्टर ने मुझसे पूछा।

'मैं तो बलि का बकरा हूं इंस्पेक्टर साहब जो आपके हाथ लग गया है।' मैंने विनीत स्वर में कहा—'चाहें तो सूली पर चढ़ा दें, चाहें तो बख्श दें। लेकिन असलियत यह है कि आज सुबह से पहले मैं मेहरा हाऊस के आसपास पहले कभी फटका भी नहीं। मेरी शायद किस्मत ही खराब थी जो उस वक्त भी सैर से लौटते हुए भीड़ देखकर मैं मामला जानने के लिए वहां खड़ा हो गया।'

'तुम्हारा मतलब है कि कर्नल साहब ने तुम्हें इस मामले में गलत फंसाया है ?' इंस्पेक्टर ने मुझे घूरते हुए पूछा—'कोई पुरानी दुश्मनी है तुम्हारी उनके साथ।'

'जी नहीं जनाब। आज से पहले तो कभी हम दोनों एक-दूसरे से मिले भी नहीं। लेकिन मैं इतना जरूर कह सकता हूं

कि कर्नल साहब को कोई धोखा हुआ है। मैं यह नहीं कहता कि उन्होंने किसी को चहार दीवारी से कूदते हुए न देखा होगा। शायद देखा हो। लेकिन इतना यकीन मानिए कि वह मैं नहीं था। उन्हें धोखा हो जाना कोई बड़ी बात भी नहीं है जबकि आपके सामने ही जय त्रेहन ने उनके बारे में बताया है कि वे अपनी नजर को लेकर परेशान थे और चश्मा लगवाना चाहते थे।'

'लेकिन उन्होंने यह बात भी तो कही है कि उनकी पास की नजर कमजोर है दूर की नहीं।'

'मगर यह बात भी आपने नोट की होगी कि जय की बात सुनने के बाद वे कुछ गड़बड़ा गए थे और उन्होंने खुद स्वीकारा कि मेरे कपड़े दूसरे हैं। क्या इस बात से यह साबित नहीं होता कि उन्हें खुद अपने यकीन पर सन्देह होने लगा था,' मैंने अपनी बात का विश्वास दिलाने की कोशिश करते हुए कहा।

'कपड़े बदले भी जा सकते हैं।'

'जरूर बदले जा सकते हैं।' मैं बोला, 'लेकिन जरा आप यह तो सोचिए कि मेरे जैसा आदमी जोकि एक पेशेवर चोर और सजायाफ्ता मुजरिम है, ऐसी मूर्खता करेगा कि कपड़े बदलकर फिर उस जगह पहुंच जाए जहां कुछ देर पहले किसी ने उसे पकड़ने की कोशिश की थी?'

'तुम क्या हो?' इन्स्पेक्टर ने एकदम चौंककर पूछा।

'जी, मैं एक पेशेवर चोर और सजायाफ्ता मुजरिम हूं।'

यह बात अपने आप स्वीकार कर लेना मेरे लिए इसलिए आवश्यक था ताकि इन्स्पेक्टर को अपनी बात की सच्चाई का विश्वास दिलाया जा सके। वैसे भी उसे पुलिस रिकार्ड से मेरे बारे में सब-कुछ मालूम हो ही जाना था जहां कि मेरा कच्चा-चिट्ठा लिखा हुआ था।

'हूं...।' इन्स्पेक्टर ने मुझे घूरते हुए कहा—'तब तो कर्नल ने तुम्हें सही पहचाना है और अब सारा मामला भी अपने आप खुल गया है। तुम त्रेहन हाऊस में चोरी करने की नीयत से घुसे और वहां जगत त्रेहन ने तुम्हें पकड़ने की कोशिश की और तुमने उसकी हत्या कर दी। भागते समय कर्नल ने तुम्हें देखा और पकड़ने की कोशिश की, लेकिन नाकामयाब रहा। कुछ

घंटे बाद कपड़े बदलकर तुम फिर वहां पहुंच गये जहां कर्नल ने तुम्हें पहचान लिया और तुम पकड़े गये।'

'बजा फरमा रहे हैं आप,' मैंने मुंह लटकाकर कहा—'मैंने जगत ब्रेहन की हत्या की और फिर उसे दफनाने के लिए वहां कब्र खोदने भी बैठ गया। आधी कब्र खोद ली और फिर मुझे ध्यान आया कि कर्नल साहब के सुबह सैर करने का वक्त हो गया है। लिहाजा जैसे ही वे चहार दीवारी के नजदीक आए तो मैं उनके सामने जा कूदा ताकि वे मेरी शक्ल पहचान लें और भागने की कोशिश में पकड़ लें। हालांकि मैं बहुत धीरे-धीरे भागा था किन्तु न जाने क्यों कर्नल साहब मुझे उस वक्त पकड़ नहीं पाये या शायद उस वक्त उन्होंने मुझे पकड़ना बेहतर न समझा हो और मैं कपड़े बदल कर फिर वहां हाजिर हो गया ताकि मुझे पहचान कर पकड़ा जा सके।

'मेरा मजाक उड़ा रहे हो तुम।'

'नहीं जनाब, मजाक तो मैं अपनी किस्मत का उड़ा रहा हूं जो बैठे-बिठाये बेकार की मुसीबत में फंस गया।' मैं बोला—'अगर मैं साधारण नागरिक होता तो मुझे निर्दोष साबित करने के लिए बहुत-सी चीजें थीं जैसे कि मिसेज ब्रेहन का बयान कि दो नकाबपोश घर में घुस आए थे जो जगत ब्रेहन से कागजात मांग रहे थे। मिसेज ब्रेहन ने यह बात भी स्वीकार की कि उन दोनों नकाबपोशों के साथ मेरी कद-काठी नहीं मिलती। और भी बहुत सारी बातें हैं जिन्हें आप जानते हैं, जैसे कि जय ब्रेहन अपने बाप का कातिल हो सकता है। क्योंकि वह न केवल पिता की मर्जी के खिलाफ शादी करने जा रहा था बल्कि उसके बाप ने उसे अपनी वसीयत से भी बेदखल कर दिया था खुद उसकी सौतेली मां मिसेज ब्रेहन और उसका कोई सहयोगी जगत ब्रेहन का कातिल हो सकता है, ताकि जो वसीयत उसने एक दिन पहले अपनी पत्नी के नाम कर दी है उसे फिर से बदल न दे। मिसेज ब्रेहन का वह साथी कर्नल चोपड़ा भी हो सकता है। जो एक अनजान व्यक्ति को देखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा कि यही है वह आदमी जो चहार दीवारी कूदकर भागा था। मेरी जगह कोई निर्दोष व्यक्ति होता तो आपने इन सब बातों पर विचार करके उसे हालात का शिकार समझते हुए थोड़ी-बहुत तफ्तीश के बाद छोड़ दिया होता। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं होगा।

क्योंकि मेरा रिकार्ड सजायाफ्ता मुजरिम का है जिसके तहत असली अपराधी न मिलने की सूरत में मुझे बलि का बकरा बनाकर सूली पर चढ़ा दिया जायेगा। जबकि सच्चाई यह है जनाब इन्स्पेक्टर साहब कि मेरा इस सारे मामले से कुछ लेना-देना नहीं है। किस्मत खराब थी मेरी, जो भीड़ देखकर उत्सुकता रोक न पाया और वहां खड़ा हो गया। न मैं वहां रुकता न यह बेकार की मुसीबत मेरे गले पड़ती।'

'तो तुम इन्कार करते हो कि तुम सुबह चार बजे के करीब मोहन हाऊस के आसपास नहीं थे?'

'बिलकुल नहीं जनाब।'

'तब कहां थे?'

'मैं तो उस वक्त आराम से सो रहा था।'

'कोई आदमी इस बात की गवाही दे सकता है?'

'जी हां, दे सकता है—लेकिन मुझे यकीन नहीं कि आप उसकी सच्ची गवाही पर यकीन करने के लिए तैयार हो जाएंगे।'

'क्यों? उसकी गवाही पर क्यों यकीन नहीं करूंगा?'

'इसमें आपका कोई कसूर नहीं होगा जनाब इन्स्पेक्टर साहब। क्योंकि मेरी बदकिस्मती से चोर का साथी गिरहकट वाला मुहावरा इस वक्त मुझ पर पूरी तरह फिट होता है।'

'मतलब?'

'मेरा गवाह गनेशी है जो कि एक किस्म से मेरा हमपेशा और मेरी ही तरह सजायाफ्ता मुजरिम भी है।'

'वही गणेशी तो नहीं जिसका पिछले दिनों मोटर-साइकिल से एक्सीडेंट हो गया था।'

'जी हां बिल्कुल वही। मुझे जब एक्सीडेंट की खबर लगी तो मैं उसकी मिजाजपुर्सी के लिए उसे देखने यहां चला आया। मैं तो अगले दिन ही वापिस लौट जाना चाहता था किन्तु गनेशी ने कहा था कि अकेला पड़ा बोर हो रहा हूं, दो-चार दिन रुक जाते तो अच्छा था। सो दोस्ती की खातिर उसका दिल लगाने के लिए मैं रुक गया। जिसका नतीजा अब आपके सामने है।'

'ओह!'

'कत्ल चार बजे ही हुआ है जनाब?' मैंने बड़ी मासूमियत

के साथ पूछा।

'सही वक्त का पता तो पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के बाद ही पता चलेगा। किन्तु डाक्टर का अनुमान है कि कत्ल आधी रात के वक्त हुआ था।'

'किसी भी काबिल और तजुर्बेकार डाक्टर का अनुमान ज्यादा गलत नहीं हो सकता,' मैंने कहा—'आप जरा खुद ही गौर कीजिए कि इस कत्ल से अगर मेरा कोई भी ताल्लुक होता तो क्या मैं आपको इतना ही बेवकूफ नजर आ रहा हूं कि आधी रात के वक्त वहां मौजूद होने के बाद उसी जगह फिर चार बजे पहुंच जाता और वहां से कर्नल साहब के हाथों पकड़ा जाने से बाल-बाल बचने के बाद फिर सात बजे उसी जगह हाजिर हो जाता। यानी यह तो सरासर वही बात है कि आ बैल मुझे मार।'

कुछ-कुछ हुई तो ऐसी ही मूर्खता थी मुझसे। फिर यह बात मैंने इस ढंग से कही कि जैसे ऐसा होना एकदम असम्भव है।

इन्स्पेक्टर के चेहरे से लग रहा था जैसे मेरे तर्कों का असर हुआ है उस पर।

मैं अपने स्वर में और अधिक अजीजी-सी लाता हुआ बोला—'बेवकूफ से बेवकूफ मुजरिम भी ऐसे हालात में अब तक इस जगह से सैकड़ों मील दूर जा चुका होता और मैं ऐसे अफलातून का बेटा हूं कि छाती तानकर न सिर्फ इस जगह दन-दना रहा हूं बल्कि बेखटके उस जगह भी पहुंच गया, जहां मेरे पकड़े जाने का सबसे ज्यादा खतरा था।'

इन्स्पेक्टर की मुद्रा विचारपूर्ण हो गई थी।

'यह सब-कुछ इसलिए हुआ हुजूर! क्योंकि मैं हालात से बेखबर था।' मैं कहता गया—'जिसका साफ मतलब है कि मैं निर्दोष हूं और बदकिस्मती से या तो मैं कर्नल साहब की किसी गलतफहमी का शिकार हो गया हूं, या फिर वे जान-बूझकर पुलिस का ध्यान बंटाने के लिए मुझे फंसा रहे हैं। मैं यह नहीं कहता कि उनकी मेरे से कोई निजी दुश्मनी है। मैं सामने खड़ा हुआ था तो उन्होंने मेरी ओर संकेत कर दिया होगा। मैं न होता तो मेरी जगह कोई और बेचारा निर्दोष फंस गया होता।'

'यानी तुम्हारे विचार में इस हत्या के पीछे कर्नल की साजिश है?'

'मेरा विचार इस बारे में अभी कुछ भी नहीं है जनाब !' मैंने कहा, 'अपने आपको निर्दोष साबित करने के चक्कर में जो कुछ भी मुझे सूझ रहा है मैं कहे जा रहा हूं। सजायाफ्ता मुजरिम होने के नाते मुझे इस मामले में बड़े आराम से बलि का बकरा बनाकर सूली पर चढ़ाया जा सकता है। लेकिन इतना समझ लीजिए कि इससे जो कोई असली अपराधी है वह बेदाग बच जाएगा। लेकिन अगर आपने मुझे अभी छोड़ दिया तो असली अपराधी बेचैन हो जाएगा क्योंकि उसकी पहली चाल नाकामयाब रहेगी और वह निश्चित रूप से फिर कोई न कोई ऐसी हरकत करेगा जिससे वह इस बार आपकी नजरों से न बच सकेगा।'

'हूं, तो तुम्हें छोड़ दिया जाए ताकि तुम्हें यहां से रफूचक्कर होने का मौका मिल जाए।'

'जरा सोचिए इन्स्पेक्टर साहब, अगर मुझे यहां से रफूचक्कर ही होना होता तो मैं यह अपनी मनहूस सूरत लिए सुबह-सुबह ग्रेहन हाऊस क्यों पहुंच जाता ?'

हालांकि बहुत मेहनत करनी पड़ी मुझे, फिर भी मैं इन्स्पेक्टर को यह यकीन दिलाने में कामयाब हो गया कि मैं वाकई निर्दोष हूं और बदकिस्मती से किसी गलतफहमी का शिकार हो गया हूं।'

वह बोला—'फिलहाल तो मैं जाने दे रहा हूं, लेकिन इतना याद रखना कि बिना मेरी इजाजत के भक्तपुर से बाहर कदम रखने की कोशिश मत करना।'

'बिलकुल नहीं करूंगा जनाब !'

'अगर ऐसी कोई कोशिश की तो इतना याद रखना बेटा कि मेरा नाम गजराज सिंह है—जहां भी होगे खोद निकालूंगा और फांसी का फंदा तुम्हारे गले में डालकर छोड़ूंगा।'

'आप निश्चिन्त रहें इन्स्पैक्टर साहब मेरी तरफ से आपको कभी कोई शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।' मैं तेजी के साथ दरवाजे की ओर बढ़ता हुआ बोला। इस डर से कि कहीं वह अपना इरादा न बदल दे।

'और सुनो।'

मैं दरवाजे के निकट ठिठककर रुक गया।

'गनेशी के यहां ही ठहरे हो न ?'

'जी हां।'

'वहीं रहना। जरूरत पड़ेगी तो तुम्हें बुलवा लूंगा।'

'जी बेहतर है।'

मैं पलट कर बाहर निकलने को हुआ तो एक व्यक्ति से टकरा गया, जिसके कन्धे पर कैमरा और एक झोला लटका हुआ था। वह लगभग पचास वर्षीय व्यक्ति शक्ल से ही कोई पत्रकार दिखाई दे रहा था।

▭ ▭

जान बची और लाखों पाए जैसी हालत थी मेरी पुलिस स्टेशन से बाहर निकलने के बाद। तेज कदमों से गनेशी के घर की ओर चल दिया। सुबह का निकला हुआ था और अब दोपहर भी बीत चुकी थी। भूख के मारे पेट में चूहे कुलबुला रहे थे।

रास्ते में एक बार पर नजर पड़ी और मैं उसमें घुस गया। चार पीस के साथ एक आमलेट और एक बीयर मंगाई। आमलेट के साथ आधी बीयर निबटाने के बाद बाकी को लिए बैठा था।

पेट तृप्त हुआ तो एक सिगरेट सुलगाई।

दिमाग अनजाने में ही पिछली घटनाओं को सोचने लगा। कर्नल पर झूठे आरोप लगाने के लिए मुझे अपने झूठ बोलने पर कोई शर्मिन्दगी नहीं थी। आखिर पुलिस से जान छुड़ाने के लिए मुझे कुछ तो कहना था। अगर जय ने कर्नल की कमजोर नजर की बात न की होती और कर्नल ने भी यह न स्वीकारा होता कि मेरे कपड़े बदले हुए हैं तो शायद इन्स्पेक्टर गजराज सिंह को अपनी निर्दोषिता का यकीन दिलाने में मुझे और भी अधिक मेहनत करनी पड़ती। वह शायद इसलिए नरम पड़ गया था, क्योंकि यह उसने भी देखा था कि जय की बात सुनने के बाद मुझ पर आरोप लगाने की कर्नल की दृढ़ता में अन्तर आ गया था।

बहरहाल कर्नल कह तो सच रहा था। इसमें कोई संदेह नहीं कि उसकी नजर काफी तेज थी और उसने वाकई मुझे ही देखा था। कम-से-कम इस सच्चाई को और कोई नहीं तो मैं तो जानता ही हूं।

मगर जय तो सरासर झूठ बोल रहा था।

उसका कहना है कि वह सुबह साढ़े पांच बजे की ट्रेन द्वारा महानगर से आया है। जबकि वह आधी रात के वक्त उस लड़की के पीछे ब्रेहन हाऊस की चहार दीवारी से बाहर कूदा था।

मैंने खुद देखा था।

आधी रात के वक्त।

तब जबकि इन्स्पेक्टर गजराज सिंह के कथन के मुताबिक डाक्टर के अनुमानानुसार हत्या हुई थी।

जय उस वक्त भवतपुर में मौजूद था और ब्रेहन हाऊस की चहार दीवारी से बाहर कूदा था। उस लड़की के पीछे···।

अचानक दीवार के दरवाजे के भीतर किसी को प्रविष्ट होते देखकर मेरी नजरें उस ओर उठ गईं। यह वही व्यक्ति था जिससे पुलिस स्टेशन में अकस्मात् ही बेध्यानी में टकरा गया था मैं।

वह सीधा बार के अन्दर पहुंचा और एक पग व्हिस्की का लेकर हाथ में उठाए हुए एक खाली मेज की ओर बढ़ा। तभी उसकी नजर मुझ पर पड़ी तो वह अपना गिलास वाला हाथ उठाकर बोला—'हैलो।'

फिर सीधा मेरी मेज की ओर बढ़ आया।

'मेरा ख्याल है कि हम दोनों मिल चुके हैं।' निकट आकर वह बोला।

'अभी कुछ देर पहले पुलिस स्टेशन के दरवाजे से बाहर निकलते समय बेध्यानी में टकरा गया था मैं आपसे।'

'मैं जानता था कि मेरी याददाश्त मुझे धोखा नहीं दे सकती।' वह मेरी अनुमति के बिना ही मेरे सामने की कुर्सी पर बे-तकल्लुफी से बैठता हुआ बोला—'कोई भी चेहरा एक बार देखने के बाद वर्षों नहीं भूलता मैं। वैसे मेरा नाम भानु गुप्ता है। पेशे से क्राइम रिपोर्टर हूं—और आप?'

'मेरा नाम रवि है।'

'बहुत ही खूबसूरत नाम है।' वह उस मामूली परिचय को घनिष्ठता में बदलने की कोशिश करता हुआ बोला—'और देखिए कि क्या खूबसूरत इत्तिफाक है कि आपका नाम रवि और मेरा नाम भानु यानी एक ही सूरज के दो नाम। भई वाह, खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो।'

मैंने कोई जवाब न देकर बीयर का एक हल्का-सा घूंट भरा।

वह भी व्हिस्की का आधा गिलास खाली करता हुआ बोला—'यह जगत श्रेहन का क्या चक्कर है? सुना है किसी ने उसका कत्ल कर दिया है।'

'कर तो दिया है।'

'किसने?'

'क्या मालूम? आप पुलिस स्टेशन गए थे, वहां से आपको सब-कुछ मालूम हो गया होगा। उन लोगों से ज्यादा जानकारी और किसे हो सकती है?'

'यही सोचकर तो वहां गया था मगर उस इंस्पेक्टर गज-राज सिंह ने जरा-सा जवाब देकर टरका दिया कि अभी तहकी-कात चल रही है। जरा सोचिए कि हम रिपोर्टरों से ही अगर पुलिस सहयोग नहीं करती—तो सामान्य नागरिक के साथ तो क्या सहयोग करती होगी। वैसे आप पुलिस स्टेशन में किस लिए गए थे?'

'ऐसे ही?'

'पुलिस स्टेशन कोई म्युनिसपैलिटी का बाग तो है नहीं, जो कोई वहां ऐसे ही सैर करने के लिए चला जाए।' भानु गुप्ता धीरे से हंसकर बोला—'बिना मजबूरी के कोई वहां जाना पसन्द नहीं करता। आपकी क्या मजबूरी थी?'

'यह मेरा निजी मामला है।' मैंने उसकी बेकार की पूछ-ताछ से उकताते हुए कहा।

'बेहतर है।' भानु गुप्ता ने अपने कंधे झटककर कहा—'आप अपने इस निजी मामले को अपनी निजी जेब में ही सम्भालकर रखिए। फिर भी अगर आपको कोई एतराज न हो तो क्या मैं अपने एक निजी मामले में आपकी राय ले सकता हूं?'

'मुझे अजनबी आदमियों को राय देने की आदत नहीं है।'

'कमाल है साहब! हम लोग इतनी देर से बातें कर रहे हैं। हम दोनों के नाम भी एक से ही हैं और फिर भी आप कह रहे हैं कि हम अजनबी हैं?' वह व्हिस्की का घूंट भरने के बाद एक सिगरेट सुलगाता हुआ बोला, 'खैर! आप जो चाहे मरजी

समझें, किन्तु मैं तो अपने आपको अजनबी नहीं समझता। इस-लिए जानना चाहता हूं कि अखबार में जब यह खबर छपेगी कि चश्मदीद गवाह कर्नल चोपड़ा ने जिस व्यक्ति को चहार दीवारी से कूदकर भागते देखा था, उसे पुलिस इन्स्पेक्टर गज-राज सिंह ने यूं ही छोड़ दिया। लोगों को शक है कि इसके लिए एक मोटी रकम ली-दी गई है।'

मैंने चौंककर उसकी ओर देखा, वह मुस्कराकर मेरी ओर ही देख रहा था और मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था कि उसकी छिपी हुई धमकी का मुझ पर यथेष्ट प्रभाव पड़ा है।

'यह सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ?' पूछा मैंने—'तुम तो कह रहे थे कि इन्स्पेक्टर ने तुम्हें कुछ नहीं बताया?'

'हां, उस इन्स्पेक्टर ने तो मुझे कुछ नहीं बताया।' उसने लापरवाही के साथ सिगरेट का कश लेकर कहा—'लेकिन पुलिस स्टेशन में इन्स्पेक्टर के अलावा और भी बहुत से लोग होते हैं, सिपाही वगैरह तथा यह मैं आपको बता ही चुका हूं कि पेशे से मैं क्राइम रिपोर्टर हूं, जिसका काम ही बन्द मटर को छीलकर अन्दर से असली खबर का दाना निकालना होता है। एक सिपाही को सिगरेट पिलाई, दस का नोट दिया और मालूम कर लिया।'

'यानी घूस तुम दे रहे हो और आरोप मुझ पर लगा रहे हो?'

'जमाना बड़ा खराब है भाई साहब। सीधी उंगलियों से घी नहीं निकले तो उन्हें टेढ़ा करना ही पड़ता है।'

'तुम क्या मेरा पीछा करते हुए यहां तक आए हो?'

'इसका तो मौका ही नहीं मिला है। मौका मिलता तो पीछा भी जरूर करता। वह तो बार देखकर गला तर करने के लिए अन्दर चला आया और मेरा सौभाग्य कि आपके दर्शन हो गए। हां, मुझे यह भी पता चला है कि पूछताछ के दौरान इन्स्पेक्टर ने आपको अपने साथ ही रखा था। जिसका मतलब है कि आपने तो सही बातें सुनी होंगी।'

मैं इस बेकार की मुसीबत को टालना चाहता था, लेकिन अखबार में वह खबर छपने की बात सुनकर मैं उससे उपेक्षित व्यवहार करने का साहस भी नहीं जुटा पा रहा था, क्योंकि इस आदमी को बेकार ही अपना दुश्मन बनाकर अपनी मुसी-

बातें बढ़ाने का मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं जानता था कि हत्या का अपराधी न होने के बावजूद एक सजायाफ्ता मुजरिम का पुलिस रिकार्ड होने के कारण यह आदमी अपने अखबार में इस बात का ढोल पीटकर मेरी मुसीबतों में इजाफा तो कर ही सकता था।

लिहाजा उससे मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के उद्देश्य से मैंने उसके खाली गिलास की ओर संकेत करते हुए कहा—'व्हिस्की मंगाऊं?'

'वह तो मैं खुद मंगा लूंगा।' वह बोला—'बल्कि बीयर खत्म करो तो तुम्हारे लिए बीयर भी मंगा दूंगा। अगर तुम मुझे त्रेहन की हत्या से सम्बन्धित सारा किस्सा विस्तार से बता दो।'

'मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं मालूम कि कल रात किसी ने जगत त्रेहन की हत्या कर दी है।' मैं बोला—'सुबह घर से घूमने के लिए निकला था तो भीड़ देखकर रुक गया। वहां कर्नल चोपड़ा नामक एक वृद्ध सज्जन को यह गलतफहमी हो गई कि सुबह चार बजे उन्होंने जिस आदमी को बहार दीवारी से बाहर कूदकर भागते देखा था, वह मैं था। लेकिन जब इंस्पेक्टर गजराज सिंह को मालूम हो गया कि मैं केवल एक गलतफहमी का शिकार हुआ हूं और डाक्टर के अनुमानानुसार हत्या आधी रात को हुई थी तो उन्होंने मुझे जाने दिया।'

'तुम तो पूछताछ के दौरान इन्स्पेक्टर के साथ थे।' भानु गुप्ता अपने लिए एक पैग व्हिस्की और मंगाता हुआ बोला—'अपनी तहकीकात के दौरान उसने क्या जानकारी हासिल की?'

चूंकि इन्स्पेक्टर ने उसे कुछ नहीं बताया था, इसलिए मैं अपनी ओर से उसे कोई बात बताकर इन्स्पेक्टर की नाराजगी भी मोल लेना नहीं चाहता था। इसलिए मैंने कहा—'मैं तो वह बेकार की मुसीबत अपने गले पड़ते देखकर इतना चिन्तामग्न हो गया था कि उन लोगों की कोई बात नहीं सुन सका। मैं तो यही सोच-सोचकर घुले जा रहा था कि इस मुसीबत से छुटकारा कैसे हासिल करूं? वह तो इन्स्पेक्टर बहुत ही भला मानुष और रहमदिल आदमी था कि…।'

मुझे किसी की प्रशंसा के श्लोक नहीं सुनने बल्कि असली किस्सा मालूम करना है।' भानु ने मुझे टोकते हुए कहा।

'अगर आप मेरी बात मानें तो मैं सारा किस्सा मालूम करने का बहुत ही आसान तरीका बता सकता हूं।'

'वह क्या ?'

'आप खुद त्रेहन हाऊस जाकर परिवार के लोगों से ही सारी जानकारी हासिल क्यों नहीं कर लेते ?'

'वाह बेटे, तुम मुझे ही पहाड़ा पढ़ाने चले हो ?' भानु गुप्ता अपने गिलास में से घूंट भरता हुआ बोला—'पिछले तीस साल से क्राइम रिपोर्टरी करता फिर रहा हूं तो अपनी खोपड़ी में इतनी अक्ल तो रखता ही हूं कि मुझे कहां से कैसे खबर हासिल करनी चाहिए। तुम न मिलते तो मैं वही करता जो तुम बता रहे हो। अचानक तुम मिल गए तो सोचा कि तुमसे भी कुछ मालूम कर लिया जाये।'

'मेरे साथ बात करके तो आप अपना वक्त ही खराब करेंगे।' मैंने उसे कुछ नरम पड़ता देखकर उत्साहित स्वर में कहा—'बेहतर यही होगा कि आप त्रेहन हाऊस पहुंचकर ही सारा मामला जानने की कोशिश करें।' इस तरह आपको एक फायदा और भी होगा ?'

'वह क्या ?'

'वह जगह भी देख लेंगे जहां हत्या हुई है। कैमरा आपके पास है ही। अपने अखबार के लिए उस स्थान के फोटो वगैरह भी ले लेंगे आप ?'

'यह बात तो मेरे दिमाग से ही निकल गई थी।' भानु गुप्ता ने विचारपूर्ण मुद्रा में कहा—'लेकिन तुम इतना तो कर सकते हो कि मुझे त्रेहन हाऊस तक पहुंचा दो।'

'क्यों नहीं।' मैंने इतनी आसानी से आपनी जान छूटते देखकर उत्साहित स्वर में कहा।

भानु ने उसके बाद एक पैग और पिया। उसे खुश करने के लिहाज से पैसे मैंने ही दिए।

बाहर निकले तो सूरज की तेज रोशनी में नशे से बोझिल आंखें कुछ देर के लिए चौंधिया-सी गईं।

होंठों में सिगरेट दबाए भानु अपना स्कूटर स्टार्ट करने लगा, जिस पर वह महानगर से भक्तपुर तक का बीस मील

लम्बा सफर तय करके आया था।

▭ ▭

'वह जो बड़ा-सा पेड़ दिखाई दे रहा है न, वही है त्रेहन हाऊस।' मैंने उस सड़क पर पहुंचने के बाद स्कूटर ड्राइव करते भानु को बताया।

लेकिन इसके बावजूद भी जब उसने शिल्पा के मकान के सामने स्कूटर रोका तो मैं बोला—'यह नहीं भाई, इस मकान से अगली जो वह कोठी है—वह है—त्रेहन हाऊस।'

'मुझे मालूम है।'

'तो फिर यहां क्यों स्कूटर रोक दिया ?'

'देखो बरखुरदार !' भानु ने स्कूटर रोकने के बाद भी उस पर बैठे-बैठे कहा—'तीस साल के अपनी क्राइम रिपोर्टरी के तजरबे में मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि किसी भी मामले की जितनी बढ़िया जानकारी पड़ोसियों से मिल सकती है, उतनी बढ़िया जानकारी उन लोगों से नहीं मिल सकती जिनके बारे में कि आप जानकारी हासिल करनी चाहते हैं।'

'ओह ! स्कूटर से नीचे उतरते हुए मैंने कहा।

भानु ने भी स्कूटर से नीचे उतरकर उसे स्टैंड पर लगाते हुए कहा, 'वहां जाने से पहले मैं बाहर से कुछ तथ्य इकट्ठे कर लेना चाहता हूं, इसीलिए पहले पुलिस स्टेशन गया था। इसी-लिए अचानक उस बार में तुमसे मुलाकात हो जाने के कारण मैंने तुमसे ही पूछताछ शुरू कर दी थी। अब यहां आया हूं तो अपना काम पड़ौस से ही शुरू करूंगा।'

पहले मेरा इरादा था कि उसे त्रेहन हाऊस के सामने पहुंचाकर मैं वहां से चलता बनूंगा। किन्तु जब उसने शिल्पा के घर के आगे अपना स्कूटर रोका और अपना यह इरादा जाहिर किया कि वह यहीं से अपना काम शुरू करेगा तो मैं उसे एक-बार फिर से देखने का लोभ सम्भरण न कर सका। हालांकि यह मुझे मालूम हो चुका था कि उसका रोमांस जय से चल रहा है और मेरे लिए वे अंगूर खट्टे हैं, किन्तु फिर भी उसके उस अप्सराओं जैसे दिव्य रूप में एक ऐसा आकर्षण था जो मुझे जबर्दस्ती अपनी ओर खींचकर आंखें ठण्डी करने के लिए उकसा रहा था।

भानु कन्धे पर अपना कैमरा और झोला सम्भालता हुआ

मकान के दरवाजे की ओर बढ़ा तो मैं भी बे-मतलब उसके पीछे-पीछे चल दिया।

भानु की दस्तक के जवाब में स्वयं राधा देवी ने ही दरवाजा खोला।

मेरी आंखें उसके पीछे शिल्पा को तलाश कर रही थीं, किन्तु वह कहीं न दिखाई दी। शायद भीतर कहीं होगी।

'मैं डेली मार्निंग न्यूज का क्राइम रिपोर्टर भानु गुप्ता हूं मैडम!' भानु गुप्ता ने अपने विशिष्ट अन्दाज में कहना शुरू किया—'आपके पड़ौस में मिस्टर जगत ब्रेहन की हत्या हो गई है शायद—क्या आप मुझे बताने की कृपा करेंगी…।'

'मैं इस बारे में कुछ नहीं बता सकती।' राधा देवी ने उपेक्षा के साथ कहा—'आपको जो कुछ भी पूछना है ब्रेहन हाऊस में जाकर पूछिये।'

कहने के साथ ही दरवाजा झटके के साथ बन्द कर लिया गया।

'स्ट्रेंज…वैरी स्ट्रेंज।' भानु गुप्ता अजीब ढंग से अपनी खोपड़ी खुजाता हुआ बोला।

'क्या हुआ?'

'तुम्हें बताया था न मैंने कि मेरी याददाश्त बहुत तेज है।' वह मेरी ओर उन्मुख होकर बोला—'एक बार जो चेहरा देख लेता हूं उसे जिन्दगी भर नहीं भूलता मैं…यह चेहरा मेरा देखा हुआ है और खूब देखा हुआ है…लेकिन याद नहीं आ रहा कहां देखा है…लगता है बुढ़ापा आने लगा है मुझ पर, जो याददाश्त कमजोर होती जा रही है…कहां देखा है यह चेहरा अरे हां याद आया…कौशल मर्डर केस…।'

फिर आगे कुछ कहे बिना ही उसने बन्द दरवाजे को एक बार फिर से थपथपा दिया। इस बार पहले से भी अधिक जोर के साथ।

राधा देवी ने भी इस बार पहले सेकहीं अधिक तेजी के साथ दरवाजा खोला और बहुत ही झुंझलाए स्वर में बोली—'आप लोग हमें तंग करना बन्द नहीं करेंगे? क्या हमें पुलिस को बुलाना होगा?'

'माफ कीजिए, कहीं आप मिसेज कौशल तो नहीं?'

एक बार तो मुझे लगा कि राधा देवी बुरी तरह हड़बड़ा

गई, फिर उसने जोरदार लफ्जों में कहा—'जी नहीं, मेरा नाम राधा है।'

कहने के साथ ही उसने झटके से फिर दरवाजा बन्द कर लिया।

'स्ट्रेंज···वैरी स्ट्रेंज।' भानु गुप्ता अपनी खोपड़ी खुजाता हुआ बोला—'मेरे जैसा आदमी जिसकी याददाश्त इतनी तेज है कि एक बार कोई चेहरा अच्छी तरह से देख ले तो उसे जिन्दगी भर नहीं भूलता, वह इतना बड़ा गच्चा कैसे खा गया? स्ट्रेंज···वैरी स्ट्रेंज···एक ही झटके में सारा नशा उतर गया। जब तक दो-चार पैग और अन्दर नहीं जाएंगे तो खोपड़ी दुरुस्त नहीं होगी।'

और अपने ही विचारों में गुम उसने स्कूटर स्टार्ट किया और वहां से वापिस हो लिया। शायद बार की ओर जा रहा था। जाते समय उसने मुझसे विदा लेनी भी जरूरी नहीं समझी। मैंने भी सोचा कि बला टली और गनेशी के घर की ओर चल दिया।

लौटते में आंखें बॉलकनी की ओर उठीं तो देखा शिल्पा खड़ी थी। नजरें मिलते ही वह भीतर घुस गई।

▭ ▭

'अरे दिन भर कहां रहा तू? मैं तो सोच-सोचकर ही परेशान हो रहा था कि कहीं पुलिस ने तो नहीं थाम लिया तुझे?'

गणेशी के घर पहुंचा तो वह बड़ी बेचैनी के साथ मेरा इन्तजार कर रहा था। जिसका सबूत थी भरी हुई ऐश-ट्रे। टांग टूटी होने के कारण चल-फिर तो सकता नहीं था वह। इसलिए शायद बेचैनी में फटाफट सिगरेट फूंकता रहा वह। जब मैं वहां पहुंचा तो शाम ढल आई थी और उस समय भी उसके हाथ में एक सिगरेट थी जिसे वह दूसरी सिगरेट के टोटे से सुलगा रहा था।

'हां, थाम तो पुलिस ने ही लिया था।' बत्ती जलाकर मैंने कमरे के भीतर का अन्धेरा दूर करने के बाद स्वयं एक कुर्सी पर निढाल-सा बैठते हुए एक सिगरेट सुलगाई।

'हुआ क्या था?'

मैंने उसे सारा किस्सा सुनाया।

'मैंने तेरे को पहले ही मना किया था, वहां मत जा।

कनेगी ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा—'मगर तू किसी की सुनता है क्या ? और जब पुलिस में पकड़ा ही गया था तो तूने सारी बात इन्स्पेक्टर को साफ-साफ क्यों नहीं बता दी।'

'सब साफ तो बता दिया अपने बारे में। तभी तो उसने छोड़ भी दिया। नहीं तो हवालात में बन्द नहीं कर देता।'

'मगर तू उस छोकरे की बात काहे को गोल कर गया ? आधी रात को तूने उसे चहार दीवारी कूदते देखा था न ?'

'देखा था ?'

'फिर उस इन्स्पेक्टर को यह सब क्यों नहीं बता दिया ? गोल क्यों कर गया ?'

'वाह-वाह, बड़ी अक्ल की बात बता रहा है मेरे को।' मैंने गरदन को झटका देते हुए कहा—'कर्नल ने मेरे को चहार दीवारी कूदते देखा था और मैं कहता कि मैंने उस छोकरे को चहार दीवारी कूदते देखा है। इन्स्पेक्टर तभी यह सोचता कि अपने को बचाने के लिए मैं बेकार ही उस छोकरे को फंसा रहा हूं और जब इन्स्पेक्टर मुझसे यह पूछता कि बारह बजे मैं क्या वहां बन्दगोभी बेच रहा था तो क्या जवाब देता ? तब यह भी बताना पड़ता कि मैं चन्द्रहार की चोरी का प्रोग्राम बना रहा था। मामला साला बम्बई से कलकत्ते तक लम्बा हो जाता।'

'लेकिन अगर इन्स्पेक्टर को मालूम हो गया कि तू उससे झूठ बोला है तो वह कहीं खुन्दक में तेरे कू लम्बा न तान दे।'

'अब कैसे मालूम होगा ? कर्नल के अलावा किसी ने मुझे देखा ही नहीं और यह मैं साबित कर आया हूं कि कर्नल को धोखा हुआ है। उस छोकरे ने भी पहले कह दिया था कि कर्नल की नजर कमजोर है ?'

'लेकिन उस छोकरे ने तेरे को बचाने के लिए ऐसा क्यों कहा ?'

'उसने मेरे को बचाने के लिए कुछ नहीं कहा।' मैंने सिगरेट की राख फर्श पर झाड़ते हुए कहा—'चहार दीवारी से कूदने की बात सुनकर वह साला बौखला-सा गया था शायद और यह समझा कि कहीं उसे ही न देख लिया हो, इसीलिए शायद यह सब कह गया वो। आखिर चहार दीवारी कूदकर तो वह भी भागा था।'

'मेरे को तो पक्का यकीन है कि उस छोकरे ने ही अपने बाप का कत्ल किया है ?'

'मेरा भी यही ख्याल है वरना उसे झूठ बोलने की क्या जरूरत।' मैंने कहा—'मगर उसके बाप ने भी तो हद कर रखी थी न। जिस छोकरी से वह शादी करना चाहता था, उससे उसकी शादी नहीं होने दे रहा था। वसीयत से भी उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका, लेकिन यार गनेशी एक बात तो है। हालांकि वे दोनों सौतेले मां-बेटे हैं, मगर पुलिस के सामने जता रहे थे जैसे सगों से भी बढ़कर हों।'

काफी देर तक हम उन लोगों के बारे में इधर-उधर की बातें करते रहे। बाहर रात का अन्धेरा उतर आया था।

'खैर ! अब उन लोगों की बातों के चक्कर में वक्त क्या खराब करना।' गनेशी ने उकताए हुए स्वर में कहा—'पुलिस जाने और उसका काम। तू साफ निकल आया मेरे को इसी की खुशी है। ले,जाकर एक बोतल ले आ ?'

कहने के साथ ही उसने तकिये के नीचे से एक सौ का नोट निकालकर मेरी ओर बढ़ाया।

'रहने दे, रहने दे।' मैंने कुर्सी से उठते हुए कहा—'पैसे बहुत हैं मेरे पास।'

'यार यहां तू मेरा मेहमान है और सारा खर्चा तू ही कर रहा है, मेरे को अच्छा नहीं लगता।

'दोस्ती में कोई किसी का मेहमान नहीं होता। पहले चाय पीकर फ्रेश होऊंगा फिर बाटली लेने जाऊंगा।'

'साथ में कुछ चपाती और सब्जी भी पकड़ता लइयो। फिर बाद में कहां जाता फिरेगा।'

'ठीक है।'

मैंने कहा और चाय बनाने के लिए गैस की ओर बढ़ गया।

▭ ▭

पहले व्हिस्की की बोतल लेकर फिर होटल से खाना लेने का इरादा था मेरा। लिहाजा सबसे पहले मैं शराब की दुकान पर ही पहुंचा। उस समय वहां खरीदने वालों की संख्या अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा थी।

मैं नोट निकालकर व्हिस्की की बोतल लेने के लिए काउं-

टर की ओर बढ़ रहा था कि अचानक दो आदमियों की बात-चीत मेरे कानों मे पड़ी।

'अरे तूने कुछ सुना ?'

'क्या ?'

'त्रेहन हाऊस मे एक और लाश मिली है।'

'अच्छा ? कब ?'

'अभी-अभी मैं उधर से आ रहा था तो पुलिस मौजूद थी वहां ?'

मैं अपनी उत्सुकता न रोक सका और पूछ ही बैठा—'किसकी लाश मिली है साहब ?'

'पता नहीं जी।' उस व्यक्ति ने व्यस्त भाव से कहा, फिर अपने साथी से बोला—'भक्तपुर में जब से बाहर के लोग आकर रहने लगे हैं, अपराध बहुत बढ़ गए हैं। अभी तो दिन ढला ही है, अन्धेरा हुआ ही है और एक कत्ल और हो गया।'

मैं बोतल तो खरीदना भूल गया और इस सोच में पड़ गया कि अब किसका कत्ल हो गया। अपनी उत्सुकता पर काबू न रख सका तो पहुंच गया त्रेहन हाऊस।

बाहर तमाशाइयों की भीड़ सुबह से कम थी किन्तु पुलिस वाले पूरी संख्या में मौजूद थे। मैं अन्दर जाने को हुआ तो एक सिपाही ने मुझे रोका। मैंने उससे कहा—'इन्स्पेक्टर साहब को एक खास खबर देनी है मुझे।'

यह बात मैंने भीतर घुसकर लाश देखने के लिए की थी। न जाने क्यों मेरे दिल में खुदड़-बुदड़-सी मची हुई थी कि अब किसका कत्ल हो गया, यह जानना चाहता था मैं। क्यों जानना चाहता था, यह मुझे भी नहीं मालूम।

लाश बगीचे मे ही पड़ी थी और उसकी छाती में एक चाकू धंसा हुआ था। बिलकुल वैसा ही जैसा कि जगत त्रेहन की छाती में धंसा हुआ था।

एक व्यक्ति लाश पर झुका हुआ। वह शायद डाक्टर था। क्योंकि मेरे वहां पहुंचने पर वह सीधा खड़ा होता हुआ पास खड़े इन्स्पेक्टर से बोला—'मेरे विचार में तो इस आदमी को मरे अड़तालीस घण्टे के करीब हो चुके हैं।'

मैंने लाश को गौर से देखा। वह कोई अजनबी ही था, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसने कीमती वस्त्र पहने

हुए थे। इस बार मैंने उसकी छाती में धंसे चाकू को विशेष रूप से देखा। वह नेपाली खुखरी जैसा था। बिलकुल वैसा ही था देखने में जिससे जगत त्रेहन की हत्या की गई थी।

निकट ही मिसेज त्रेहन, मालती और नौकरानी सुलोचना खड़ी हुई थीं। तीनों के चेहरे पीले पड़े हुए थे।

इन्स्पेक्टर ने एक उचटती-सी नजर डाली और फिर मुझे लगभग अनदेखा-सा ही करके वह उन तीनों को ही एक साथ सम्बोधित करते हुए बोला—'इस आदमी को आपमें से कोई नहीं पहचानता।'

'जी नहीं साहब।' सुलोचना एकदम बोली—'इस आदमी को तो मैंने अपनी जिन्दगी में पहले कभी नहीं देखा।'

'सबसे पहले तो लाश तुमने ही देखी थी न ?'

'जी हां।' सुलोचना ने जवाब दिया—'मैं बाजार से सब्जी लेकर लौट रही थी कि भीतर घुसते ही मुझे यह लाश पड़ी दिखाई दी। पर साहब, इस आदमी को चाहे मैंने कभी न देखा हो, लेकिन इन कपड़ों को अच्छी तरह से पहचानती हूं मैं, जो इसने पहन रखे हैं।'

'किसके कपड़े हैं यह ?'

'बड़े मालिक के।'

'यानी मिस्टर जगत त्रेहन के ?'

'जी हां साहब ?'

इन्स्पेक्टर ने मिसेज त्रेहन की ओर उन्मुख होकर पूछा—'यह त्रेहन साहब के कपड़े हैं ?'

'जी हां, कपड़े तो उन्हीं के हैं ?' मिसेज त्रेहन ने घबराये-से स्वर को संयत करने का प्रयत्न करते हुए कहा—'लेकिन इस आदमी को नहीं पहचानती कि यह कौन है ?'

'आपने कहीं देखा है इस आदमी को ?' इन्स्पेक्टर ने इस बार यह प्रश्न मालती से किया था।

'जी नहीं ?'

इसके बाद इन्स्पेक्टर ने मेरी ओर देखकर पूछा—'तुम पहचानते हो इस आदमी को ?'

'जी नहीं। मैंने भी गरदन हिलाकर जवाब दिया।

जिस पर इन्स्पेक्टर ने धीरे से गरदन हिलाकर मिसेज त्रेहन की ओर उन्मुख होकर पूछा— 'लाश को जरा गौर से

देखकर आप बताइये कि कहीं यह उन दो नकाबपोशों में से एक तो नहीं जो आपको बांधने के बाद आपके पति को खींच-कर बाहर ले गये थे?'

'शायद हो।' लाश पर नजरें जमाते हुए मिसेज त्रेहन ने कहा—'लेकिन मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकती।'

'तुम बाजार से सब्जी लेकर लौट रही थीं जब तुमने लाश देखी?' इन्स्पेक्टर ने सुलोचना से सवाल किया।

'जी हां।'

'जब तुम गई थीं तब लाश यहां नहीं थी?'

'जी नहीं।'

'जब लौटकर आईं तो लाश यहां पड़ी थी।'

'जी हां।'

'लाश देखने के बाद तुमने क्या किया?'

'मैं भय से चीख पड़ी जिसे सुनकर मालकिन और मालती बीबी भीतर से दौड़ती हुई आईं और लाश देखकर हैरान रह गईं।'

'आप दोनों भीतर क्या कर रही थीं?'

'जिनके घर में मौत हो जाती है वे भीतर बैठकर क्या किया करते हैं? 'मिसेज त्रेहन ने पलटकर सवाल किया और फिर बोली—'हम अपनी बदकिस्मती पर आंसू बहा रही थीं।'

'तुम्हें सब्जी लेकर लौटने में कितना समय लगा?' इन्स्पेक्टर ने सुलोचना से प्रश्न किया।

'लगभग आध घण्टा लगा होगा।' सुलोचना बोली—'कोई ज्यादा खरीददारी तो करनी नहीं थी। बस मालती बीबी के लिए गोभी खरीदनी थी। सो आने-जाने में जो समय लगा वह पन्द्रह मिनट जाने के और पन्द्रह मिनट आने के। सब्जी मण्डी यहां से थोड़ा दूर पड़ती है न?'

'तो आपने गोभी बनाने की फरमाइश की थी?' इन्स्पेक्टर ने मालती से पूछा।

'जी नहीं, इसने कोई फरमाइश नहीं की थी।' मालती की बजाय मिसेज त्रेहन ने जवाब दिया—'यह तो खाना खाने के लिए ही तैयार नहीं थी। हममें से आज किसी ने भी सुबह से कुछ नहीं खाया है। यहां तक कि सुलोचना ने भी नहीं। हमारे

यहां आज खाना बना ही नहीं। मेरी खाने की इच्छा नहीं थी, लेकिन मैं चाहती थी मालती और सुलोचना कुछ खा लें। इस-लिए उसे खाना बनाने के लिए कहा, लेकिन मालती इन्कार किए जा रही थी। मुझे मालूम है कि गोभी की सब्जी मालती को बहुत पसन्द है—इसलिए सुलोचना को गोभी लेने के लिए भेज दिया था। यह सोचकर कि मनपसन्द सब्जी बनेगी तो सुबह से भूखी बेचारी लड़की दो कौर खा लेगी।

इन्स्पेक्टर ने धीरे से गरदन हिलाई और फिर बोला—'बहरहाल यह बात तो साबित होती ही है कि इस बीच के आधा घंटे में यह आदमी और हत्यारा यहां मौजूद थे।'

'तुम गलत ढंग से सोच रहे हो इन्स्पेक्टर।' पास खड़े हुए डाक्टर ने कहा—'मेरे विचार में इस आदमी को मरे हुए अड़तालीस घण्टे से ऊपर हो गए हैं। इसका मतलब है कि लाश इस आध घण्टे के बीच यहां लाकर डाली गई है।'

'लेकिन हत्या कहीं और करके लाश यहां डालने के पीछे हत्यारे का क्या उद्देश्य हो सकता है?'

'यह पता लगाना तुम्हारा काम है।' डाक्टर ने अपने कंधे झटककर उत्तर दिया—'वैसे अगर तुम्हारे आदमी लाश के फोटो वगैरह लेने का अपना काम निबटा चुके हों तो मैं एक बार फिर लाश का निरीक्षण करना चाहूंगा।'

इन्स्पेक्टर ने फोटोग्राफर से पूछा तो उसने बताया कि उसका काम खत्म हो चुका है।

जिस पर डाक्टर एक बार फिर लाश के ऊपर झुक गया और उसकी छाती में धंसे चाकू को बहुत ही सूक्ष्मता से देखने लगा। इन्स्पेक्टर के साथ-साथ हम सभी लोग उत्सुकता के साथ डाक्टर के क्रिया-कलापों को देखते रहे।

काफी देर निरीक्षण करने के बाद डाक्टर ने अपनी जेब से रूमाल निकाला और फिर बड़ी सावधानी के साथ, ताकि उसके दस्ते पर बने उंगलियों के निशान इत्यादि को कोई क्षति न पहुंचे, चाकू बाहर निकाला। कुछ क्षण तक उसका निरीक्षण करने के बाद वह उसे और गौर से देखने के लिए अधिक रोशनी की ओर बढ़ गया।

वहां अच्छी तरह चाकू का निरीक्षण करने के बाद वह धीरे से मुस्कराया और फिर इन्स्पेक्टर के निकट आकर बोला,

'यह चाकू इस आदमी के शरीर में इसकी मौत के बाद धंसाया गया है।'

'क्या मतलब !'

'इस चाकू के इस आदमी के शरीर में धंसाए जाने से पहले यह आदमी या तो मर चुका था, अथवा मार डाला गया था।'

'यानी इस चाकू से इसकी हत्या नहीं की गई है ?'

'इसकी हत्या अथवा इसकी मृत्यु के असली कारण का पता तो पोस्टमार्टम के बाद ही लगेगा, किन्तु इतना मैं दावे से कह सकता हूं कि यह चाकू इसकी मौत का कारण नहीं है। जब यह चाकू इस आदमी की छाती में घोंपा गया तब इसे मरे हुए कई घण्टे हो चुके थे।'

'आप यह बात किस आधार पर कह रहे हैं ?'

'चाकू के फल को गौर से देखो।' डाक्टर ने चाकू इन्स्पेक्टर को दिखाते हुए कहा—'अगर इस चाकू को किसी जिन्दा आदमी की छाती में धंसाया जाता तो इसका फल खून से लिथड़ा हुआ होता। इतने घण्टे बाद भी वह खून चाहे जम-कर अपना रंग बदल चुका होता, किन्तु वह फल के साथ ही चिपका हुआ होता। जबकि फल बिलकुल साफ है जिसका मत-लब है कि इसे जब इस व्यक्ति के शरीर में धंसाया गया, तब शरीर में खून नहीं था और यह तभी मुमकिन है जबकि आदमी मर चुका हो।'

'लेकिन यह आप कैसे कह सकते हैं कि चाकू इसकी मौत के कई घण्टे बाद धंसाया गया था ?'

'मरने के तुरन्त बाद ही शरीर में खून का रंग बदलने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है, लेकिन इसमें समय लगता है। यह नहीं कि इधर आदमी मरा और इधर खून का रंग बदल गया। इसलिए अगर मृत्यु के तुरन्त बाद भी चाकू धंसाया जाता तो भी इस पर खून के दाग लग गए होते, लेकिन चाकू पर खून का दाग नहीं है जिसका साफ मतलब है कि जब चाकू धंसाया गया तब खून अपना रंग बदल चुका था। इन तथ्यों की रोशनी में यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं कि जब चाकू धंसाया गया तो इस आदमी को मरे कई घण्टे बीत चुके थे।'

डाक्टर के तर्क ठोस और सटीक थे। इसलिए इन्स्पेक्टर

ने उससे ज्यादा बहस नहीं की।

उसने मिसेज त्रेहन से सवाल किया—'इस चाकू को पहचानती हैं आप ?'

'जी हां।'

'किसका है यह चाकू ?'

'हमारा है।'

'आपका !'

'जी हां।' मिसेज त्रेहन बोली—'काठमांडू में इस तरह की खुखरियां आम बिकती हैं। यादगार के रूप में हम इन्हें वहां से ले आये थे। बाकी तो जय ने अपने दोस्तों को उपहार में दे दीं, एक थी जो हमने अपने कमरे में सजा ली थी। कल रात जो चाकू वह लम्बा नकाबपोश मिस्टर त्रेहन की गरदन पर ताने हुए था, वह उसने हमारे कमरे में से ही उठाया था।'

'तो क्या यह चाकू वही है ?'

'शायद।'

'आप निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकतीं।'

'मुझे सारी खुखरियां देखने में एक जैसी ही लगती हैं।' मिसेज त्रेहन बोली—'मिस्टर त्रेहन की छाती में भी ऐसा ही चाकू घंसा हुआ था—इसलिए मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि दोनों में से हमारे कमरे में जो चाकू सजा हुआ था, वह कौन-सा है।'

'मिस्टर जय ने ऐसे चाकू अपने दोस्तों को भी भेंट किए हैं ?' इन्स्पेक्टर ने विचारपूर्ण मुद्रा में पूछा।

'काठमांडू की यादगार के रूप में उसने अपने मित्रों को उपहार में दिए हैं।

'मिस्टर जय इस वक्त कहां हैं ?'

'कर्नल चौपड़ा के साथ महानगर गया है ताकि वहां से पोस्टमार्टम के बाद अपने पिता की लाश को अन्तिम संस्कार के लिये ले आये।

इन्स्पेक्टर ने धीरे से सिर हिलाया। कुछ और सवाल भी किये, किन्तु जब कोई और काम की बात न जान सका तो उसने वहां से लाश उठाये जाने के आदेश दिये।

उसके बाद उसने मुझे एक ओर ले जाकर पूछा—'तुम कौन-सी खास खबर देना चाहते थे मुझे ?'

'आपको याद होगा वह रिपोर्टर भानु गुप्ता जो पुलिस स्टेशन भी पहुंचा था।'

'तो ?'

'वह अचानक ही मुझे बार में मिल गया था।'

मैंने इन्स्पेक्टर को भानु गुप्ता के साथ हुई अपनी मुलाकात के बारे में बताया और यह भी कि उसके साथ मैं ग्रे हन हाऊस की ओर आया था।

'यहां पहुंचने के बाद भानु गुप्ता ने अपनी पूछताछ पड़ोसियों से शुरू करने के उद्देश्य से राधा देवी के मकान पर दस्तक दी।'

'वहां से उसे कोई ऐसी बात मालूम हुई जो मैं नहीं जान सका।'

'राधा देवी ने तो उससे बात ही नहीं की।'

'फिर ?'

'वह किसी कौशल मर्डर केस की बात कर रहा था और उसने राधा देवी से पूछा भी था कि कहीं वे मिसेज कौशल तो नहीं।'

'तो।'

'राधा देवी ने इन्कार करते हुए फिर से दरवाजा बन्द कर लिया।'

'कौशल मर्डर केस ?' इन्स्पेक्टर ने कुछ सोचते हुए पूछा, 'यह कौन-सा केस है ?'

'यह तो मैं नहीं जानता।' मैंने जवाब दिया—'जो मुझे मालूम हुआ था, वह आपको बताने के लिए चला आया कि शायद यह जानकारी आपके काम आ सके।'

'ठीक किया तुमने ?' इन्स्पेक्टर ने कहा—'इस केस से सम्बन्धित कोई भी खबर तुम्हें लगे तो मुझे बताना।'

'जी साहब।'

'तुम्हारे उस दोस्त गनेशी के क्या हाल हैं ? टांग ठीक हुई या नहीं उसकी।'

'अभी तो कई दिन चारपाई पर पड़ा रहेगा बेचारा।'

'ठीक है अब तुम जाओ।'

▭ ▭

वहां से लौटते समय मेरी नजर शिल्पा हर के मकान की

ओर गई। मन में एक दबी हुई-सी इच्छा थी, शिल्पा के खूबसूरत चेहरे को एक नजर देख लेने की। लेकिन मकान के खिड़की दरवाजे पूरी तरह बन्द थे। न शिल्पा की ही झलक दिखाई दी, न राधा देवी की ही। लगता था जैसे मकान में कोई रहता ही न हो। इस मौत सरीखी खामोशी का कारण भी जानता था मैं। हमारे समाज में एक विधवा मां-बेटी को किस नजर से देखा जाता है, इससे मैं अनजान नहीं था। साथ ही वह अगर खूबसूरत हो और वह भी शिल्पा जैसी खूबसूरत तो भूखी नजरें गिद्ध की तरह नोंचने को लालायित रहती हैं। जैसे मेरे ही मन में बेमतलब ही बार-बार शिल्पा के उस दिव्य रूप को देखने की इच्छा उभर जाती थी।

भानु गुप्ता से प्राप्त जानकारी इन्स्पेक्टर को देकर मेरा इरादा उन दोनों का कोई अहित करने का नहीं था। क्योंकि मुझे पक्का विश्वास था कि भानु गुप्ता किसी गलतफहमी का शिकार हुआ है और शराब के नशे में राधा देवी को मिसेज कौशल—जिसे कि उसने पहले कभी कहीं देखा होगा, समझ बैठा है। वैसे इन्स्पेक्टर उस जानकारी को प्राप्त करके प्रसन्न हुआ था और यही मेरा उद्देश्य भी था। ताकि उसकी प्रसन्नता प्राप्त करके उसे अपने अनुकूल बनाए रख सकूं। वैसे भी उस समय मोहन हाउस के भीतर घुसकर एक नजर उस लाश को देखने के लिए मुझे कोई अन्य उपयुक्त बहाना नहीं सूझ सका था। वह इस बात की जांच-पड़ताल करेगा तो उसे मालूम हो जाएगा कि भानु गुप्ता किसी गलतफहमी का शिकार हुआ है।

लेकिन वह लाश किस व्यक्ति की थी और अन्धेरा होते ही वहां किसने उसे लाकर डाल दिया?

यही सब सोचता हुआ मैं मोहन हाउस से लौट रहा था कि किसी ने कन्धे पर हाथ रखा। चौंककर देखा तो एक परिचित चेहरे को खतरनाक ढंग से मुस्कराते पाया।

'अरे मलखान दादा आप!' मैंने चौंके हुए से ही स्वर में पूछा—'आप यहां क्या कर रहे हैं?'

'यही जवाब मैं तुमसे पूछना चाहता हूं।' मलखान ने मेरे सवाल का कोई जवाब न देकर कहा—'तुम यहां क्या कर रहे हो?'

'मैं यहां गनेशी से मिलने आया था। गनेशी को तो जानते ही हैं न आप ?'

'वही तुम्हारा साथी चोर ?'

'बिलकुल वही।'

'वह इन दिनों भक्तपुर में रह रहा है ?'

'जी हां, बेचारे की पिछले दिनों एक्सीडेंट में टांग टूट गई थी। सो उसे देखने के लिए आया हूं यहां ?'

'मोहन हाऊस से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ?'

'कुछ नहीं, सुना है यहां कत्ल हो गया है, सो देखने चला आया। वैसे आप यहां किस सिलसिले में आए हैं ?'

'बस ऐसे ही चला आया ? गनेशी के बहुत ज्यादा चोट आई है क्या ?'

'मैंने बताया न कि टांग टूट गई है उसकी।'

'चलो जब यहां तक आया हूं तो एक नजर उसे भी देखता चलूं। तुम्हारे पास कोई सवारी तो नहीं है शायद।'

'नहीं पैदल ही हूं। मैं तो गनेशी के यहां से बोतल और रोटी खरीदने निकला था कि खबर लगी कि मोहन हाऊस में फिर कोई कत्ल हो गया है सो उत्सुकतावश दौड़ा चला आया।'

'तब आओ, मेरे पास कार है।'

मैं यह सोचता हुआ मलखान के साथ चल दिया कि यह आदमी गनेशी को क्यों देखना चाहता है। मुझे उसके भक्तपुर में होने पर कोई सन्देह नहीं था। क्योंकि मैं जानता था कि यह आदमी किसी भी समय दुनिया के किसी भी कोने में मौजूद हो सकता है। हालांकि वह पचास से ऊपर की उम्र का एक अधेड़ आदमी था किन्तु शरीर में ताकत भैंसे जैसी थी। मलखान हीरों का शातिर चोर भी था, स्मगलर भी और व्यापारी भी। चोरी का माल भी खरीदता था। मैंने और गोपाल ने कई बार उसे चुराया माल बेचा था। उसके साथ हमारा इतना ही सम्बन्ध था और जानकारी भी। लेकिन मैंने उसे इतना सामाजिक प्राणी कभी भी नहीं माना कि वह बिना मतलब ही किसी के हाल-चाल पूछने के लिए उसके घर जाए। वसे ऐसा मौका भी कभी नहीं पड़ा था पहले।

'रास्ता बताते चलना।' कार में बैठने के बाद मलखान ने कहा।

'अभी तो सीधे चलिए।' मैंने उसके निकट ही अगली सीट पर बैठे हुए कहा—'रास्ते में कोई शराब की दुकान दिखाई दे तो रोकना।'

'त्रेहन हाऊस में आज सुबह भी तो एक कत्ल हो चुका है?' मलखान ने गाड़ी स्टार्ट करके गाड़ी आगे बढ़ाते हुए कहा, उसकी नजरें सामने सड़क पर ही जमी हुई थीं।

'हां, जगत त्रेहन का कत्ल हो चुका है।' मैंने अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—"सिगरेट लीजिए।'

उसने एक नजर सिगरेट की ओर देखा और फिर बोला—'नहीं, सिगरेट छोड़ दी मैंने।'

मैं एक सिगरेट निकालकर सुलगाने लगा।

'इसका मतलब है कि एक ही दिन में दो कत्ल हो गए त्रेहन हाऊस में?'

'हां, एक ही दिन में दो लाशें मिली हैं। डाक्टर का कहना है कि अब जिस आदमी की लाश मिली है। इसे मरे तो अड़तालीस घंटे से ऊपर हो गए हैं।'

'अब किसकी लाश मिली है?'

'पता नहीं कोई अजनबी आदमी है। घर के लोग तक नहीं पहचानते उसे।'

'तुम भी नहीं पहचानते उसे?'

कश लेने के लिए होंठों की ओर जाता हुआ मेरा हाथ बीच में ही थम गया। मैंने मलखान को घूरा। किन्तु उसकी नजरें सामने सड़क पर ही जमी हुई थीं।

'उस आदमी को पहचानना चाहिए मुझे?'

'मैंने सोचा शायद पहचानते हो।' मलखान मेरी ओर देखे बिना ही बोला, 'वैसे पुलिस ने जगत त्रेहन की हत्या के सन्देह में तुम्हें पकड़ा था न? किसी कर्नल ने तुम्हें बहार दीवारी फांदकर भागते देखा था?'

'उस कर्नल को गलतफहमी हुई थी।' मैंने सिगरेट का कश लेकर जवाब दिया—'किसी और को देखा होगा। भीड़ में मुझे खड़ा देखा तो मेरी ओर ही उंगली उठा दी, बाद में जब पुलिस को यकीन हो गया कि कर्नल को वाकई मेरे बारे में गलत-फहमी हुई थी तो उसने मुझे छोड़ दिया।

'कर्नल को वाकई गलतफहमी हुई थी क्या ?'

'क्या मतलब ?'

'मैं सिर्फ इतना जानना चाहता हूं प्रिन्स कि कर्नल ने जिस आदमी को वहार धीवारी फांदकर भागते देखा था, वह तुम्हीं थे या कोई और ?'

'यह सब सवाल तुम किसलिए कर रहे हो मलखान ?' मैंने सावधान होकर शंकित दृष्टि से देखते हुए पूछा।

लेकिन मेरी बात का जवाब देने की बजाय मलखान ने कार रोकते हुए कहा—'तुम्हारी शराब की दुकान आ गई।'

'आजकल कौन-सा ब्रांड पीते हो ?' मैंने नीचे उतरने के लिए दरवाजा खोलते हुए पूछा।

'मैंने शराब छोड़ दी है।' मलखान बोला—'तुम्हें अपने लिए जो कुछ भी लेना है ले लो।'

'पिछली बार की मुलाकात से अब तक के बीच बहुत परिवर्तन आ गया है।' मैं बोला—'सिगरेट छोड़ दी, शराब छोड़ दी और क्या-क्या छोड़ दिया है ?'

'अपनी बदमाशियां नहीं छोड़ी हैं मैंने।' वह धीरे-से हंसकर बोला।

मैंने बोतल खरीदने के बाद पास के ही होटल से खाना बंधवाया और वापिस कार में आ बैठा। इस बीच मैं यही सोचता रहा था कि यह सारे सवाल करने के पीछे मलखान का उद्देश्य क्या है ?'

कहीं यह भी तो उसी चन्द्रहार के चक्कर में यहां नहीं आया जिसे चुराने के लिए मैं गनेशी के बुलाने पर यहां आया था।

लेकिन अब जबकि इन हत्याओं के कारण उसके चुराए जा सकने की लगभग सभी आशाएं फिलहाल समाप्त हो चुकी हैं तो यह इतने सवाल क्यों पूछता फिर रहा है ?

अगर यह साबित भी हो जाए कि जगत मोहन की हत्या मैंने की है तो इससे मलखान को क्या हासिल हो सकता है ?

कहीं जगत मोहन की हत्या मलखान ने तो नहीं की है ? हो सकता है, यह भी मेरी तरह रात को मुझसे पहले टोह लेने आया हो और जगत मोहन द्वारा पकड़ा गया हो और बचने के लिए उसकी हत्या.....।

फिर अपनी मूर्खता पर मुझे स्वयं ही हंसी आ गई। यह तो मैं वैसे ही सोचने लगा जैसे कि वह इन्स्पेक्टर गजराज सिंह सोचकर मुझे हत्यारा साबित करने की कोशिश करने लगा था, अपने ही तर्कों को याद करके मुझे लगा कि उस तरह की स्थिति में तो मलखान ने जगत ब्रेहन की हत्या नहीं की होगी।

तभी मुझे मिसेज ब्रेहन का बयान याद आया जिसमें उसने दो नकाबपोशों का जिक्र किया था।

कहीं मलखान उन दो नकाबपोशों में से तो एक नहीं है?

तभी मुझे लगा कि हम गनेशी के मकान के पास पहुंच गये हैं और मैंने उसे कार रोकने के लिए कहा।

'अबे इतनी देर कहां लगा दी? क्या विलायत से बोतल खरीदने गया था। गनेशी ने मुझे देखते ही कहा और जब मेरे पीछे आते मलखान को देखा तो बोला—'अरे मलखान दादा आप!'

'अचानक रास्ते में प्रिन्स से मुलाकात हो गई थी। पता चला कि एक्सीडेंट में तुम्हारी टांग टूट गई है सो देखने चला आया।' मलखान ने कमरे में नजरें दौड़ाते हुए कहा।

'लेकिन भक्तपुर में तो तुम्हारे आने की वजह कुछ और ही है।' मैं गिलास व पानी का प्रबन्ध करता हुआ बोला।

'हां, आने की वजह तो कुछ और ही है। लेकिन तुमने कैसे जाना?'

मैंने दो गिलासों में व्हिस्की डालते हुए कहा—'रास्ते में तुमने जितने सवाल किए, वे अपनी कहानी आप कह रहे हैं कि तुम यहां किसी चक्कर में आये हो और तुम्हारे उस चक्कर का ताल्लुक ब्रेहन हाऊस से है।'

'बिलकुल सही समझे हो तुम।' मलखान इत्मीनान से एक कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—'जब इतना समझ गये हो तो बाकी की बात भी तुम्हारी समझ में खुद-ब-खुद आ गई होगी कि मैं यहां क्यों आया हूं?'

'क्या बात है?' केवल दो गिलासों में व्हिस्की देखकर गनेशी ने पूछा—'तुमने मलखान दादा का गिलास नहीं बनाया या अपना?'

'मलखान दादा ने सिगरेट और शराब दोनों ही पीनी छोड़

दी हैं।'

'कब से ?' गनेशी भी मेरी ही तरह चौंका यह सुनकर।

'कभी से ही समझ लो।' मलखान बोला--'लेकिन मैंने अपनी बदमाशियां नहीं छोड़ी हैं।'

'यह बात तुम बार-बार क्यों दोहरा रहे हो ?' मैंने पूछा।

'पहले तुम गला तर कर लो, फिर बताता हूं।'

'गला तो अब बाद में ही तर होगा।' मैंने अपना गिलास बीच के स्टूल पर रखते हुए कहा, 'पहले यह बताओ, तुम्हारा असली उद्देश्य क्या है ?'

'हीरे !' मलखान ने मुझे स्थिर नजरों से घूरते हुए कहा—'मैं तुमसे अपने हीरे लेने आया हूं।'

▭ ▭

मलखान की बात ने मुझे और गनेशी दोनों को ही चौंका दिया। बल्कि गणेशी तो कुछ इस बुरी तरह चौंका कि न केवल उसके गिलास से व्हिस्की छलक गई बल्कि उसकी जख्मी टांग भी कुछ इस ढंग से चटकी कि वह कराह उठा।

'तुमने हमारे पास अपने कौन से हीरे जमा किए थे जिन्हें वापिस लेने आए हो तुम ?' मैंने मलखान को घूरते हुए पूछा।

'वे ही हीरे जो तुमने और मोहन ने मिलकर बशेश्वर से लिये थे और फिर जिनके लिए तुमने मोहन को भी मार डाला।'

'शराब छोड़कर तुमने कहीं भांग तो खानी नहीं शुरू कर दी है मलखान दादा।' मैंने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'और यह बशेश्वर कौन है ?'

'वही, जिसकी लाश तुम अभी देखकर आ रहे हो।'

'व···वह तुम्हारा कोई साथी है ?'

'हां···मेरा गद्दार साथी।'

'लगता है मलखान दादा को कोई गलतफहमी हो गई है।' गनेशी अपनी टांग को ठीक से फैलाकर संयत होता हुआ बोला।

'मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई है।' मलखान अपने शब्दों पर जोर देता हुआ बोला—'मेरे सामने सारा मामला शीशे की तरह साफ है। तुमने और जगत मोहन ने मिलकर बशेश्वर को फुसलाया ताकि वह मुझसे गद्दारी कर सके। लेकिन तुम सबसे

सेज निकले। तुमने और जगत ने मिलकर पहले बशेशर को मार डाला और फिर सारे हीरे खुद ही हजम कर जाने के उद्देश्य से तुमने जगत मोहन को ही ठिकाने लगा दिया।'

'इसमें कोई शक नहीं कि तुम किसी गहरी गलतफहमी के शिकार हो गए हो मलखान।' मैंने अपना गिलास उठाकर गनेशो के पास चारपाई के कोने पर बैठते हुए कहा—'लेकिन मुझे लगता है कि मैं तुम्हारी गलतफहमी तब तक दूर नहीं कर सकता जब तक कि मुझे सारा किस्सा मालूम न हो जाए।'

'सारा किस्सा भी बता देता हूं मैं तुम्हें। लेकिन जहां तक गलतफहमी का सवाल है, वह तो तभी दूर होगी जब मेरे हीरे मुझे मिल जाएंगे।'

उसके बाद मलखान ने सारा किस्सा सुनाया जो इस प्रकार था—

'बशेशर ने सिंगापुर में एक चीनी व्यापारी की सेफ में इन हीरों का पता लगाया और चुराने के लिए मेरे साथ योजना बनाई। मैं उसके साथ सिंगापुर गया और पूरी योजना बनाने के बाद एक रात हमने सेफ से हीरे निकाल लिए और उन्हें लेकर हिन्दुस्तान लौट आए।

आज से दो दिन पहले आधी रात के करीब हम महानगर एयरपोर्ट पर पहुंचे। रास्ते में ही वह कालोनी पड़ती थी जहां मैंने एक फ्लैट किराए पर लिया हुआ था। बशेशर और मैं उसी फ्लैट में पहुंचे। अपनी सफलता की खुशी का जश्न मनाने के साथ-साथ माल का बंटवारा भी कर लेने के उद्देश्य से।

मैं पहले बंटवारा कर लेना चाहता था। किन्तु बशेशर ने प्रस्ताव रखा कि पहले सुरक्षित हिन्दुस्तान पहुंचने की खुशी में जाम टकरा लें। इसमें मुझे कोई बुराई नजर नहीं आई। फ्लैट में खाने-पीने का सब सामान मौजूद था। मैंने एक सील बन्द बोतल निकाली और हम दोनों पीने बैठ गए।

किन्तु दो-तीन पैग पीने के बाद ही मेरी तबियत अचानक ही बिगड़नी शुरू हो गई। सिर बुरी तरह चकराने लगा और आंखें धुंधला गईं। जब मैंने बशेशर से इस बात का जिक्र किया तो वह मुस्कराने लगा।

बशेशर ने मुझे बताया कि उसने नजर बचाकर मेरे गिलास में जहर मिला दिया था ताकि उसे उन हीरों का हिस्सा

न करना पड़े जिन्हें चुराने के लिए उसने इतनी मेहनत की है। उसके विश्वासघात को जानकर मैं उसकी ओर झपटा किन्तु बीच में ही लड़खड़ा कर गिर पड़ा और फिर चाहकर भी न उठ सका।

बरोशर मुझे वहां मरने के लिए छोड़कर चला गया। मेरी हालत निरन्तर बिगड़ती जा रही थी। मुझे लगा कि मैं जल्दी ही मर जाऊंगा। शरीर कभी तो बुरी तरह से अकड़ जाता और कभी एकदम शिथिल पड़ जाता। मैं बयान नहीं कर सकता कि उस समय मेरी कितनी बुरी हालत हो गई। मैं नहीं जानता कि यह बात मुझे कैसे सूझी कि मैंने अपने हलक में उंगली डाल कर उल्टियां करनी शुरू कर दीं। इससे मैं बिलकुल चैतन्य तो न हुआ किन्तु अब मैं अपने हाथ-पैर कुछ हिला सकता था। हालांकि सिर अभी भी चकरा रहा था और आंखों से कुछ भी साफ नहीं दिखाई दे रहा था।

'किसी तरह गिरता-पड़ता मैं अपने पड़ौसी डाक्टर के यहां पहुंचा। वहां डाक्टर मौजूद नहीं था वह कुछ देर पहले ही किसी अर्जेन्ट विजिट पर चला गया था। लेकिन मेरे सौभाग्य से उसकी पत्नी भी डाक्टर थी। उसने मेरे पेट की सफाई वगैरह करके मुझे इंजेक्शन देकर सुला दिया।

उसके बाद मुझे होश आया तो अगले दिन की शाम हो चुकी थी। रात के दस बजे दोनों मियां-बीवी क्लिनिक से लौट कर आए। डाक्टर ने जब पूछा तो मैंने उसे सारा किस्सा ज्यों-का-त्यों बता दिया। वह मेरी असलियत से परिचित था एक-दो बार पहले भी वह मेरे शरीर से गोलियां वगैरह निकाल चुका था। सारा किस्सा सुनकर डाक्टर ने मुझसे वही बात कही जो वह पहले भी कई बार कह चुका था, 'आखिर तुम अब यह धन्धा छोड़ क्यों नहीं देते? अब पैसे की तो कोई कमी नहीं तुम्हें।'

'बस इस किस्से को निबटा लूं तो फिर छोड़ दूंगा शायद।'

'अब क्या करने का इरादा है?'

'अब तो बस बरोशर को ही तलाश करना है?'

डाक्टर ने मुझे बरोशर का हुलिया बताकर पूछा—'कहीं वही आदमी तो नहीं है तुम्हारा दशेशर?'

'बिलकुल वही है। तुमने उसे कहां देखा?

'जब अपने क्लाईंट का फोन आने के बाद मैं पेशेंट को

देखने के लिए उस अर्जेंट विजिट पर जा रहा था तो इस आदमी को मैंने इमारत से बाहर बारह सौ चौंतीस नम्बर की एक कार में बैठते देखा था।'

'कार का नम्बर तुम्हें कैसे याद रह गया ?'

'इसके लिए किसी कमाल की याददाश्त की जरूरत नहीं है बल्कि यह नम्बर ही ऐसा है कि जिसे कोई भी आदमी एक बार देखे तो वह उसे खुद-ब-खुद हमेशा के लिए याद हो जाए।'

'मतलब ?'

'तुम इतना हैरान क्यों हो रहे हो ? सीधा-सा तो नम्बर है एक-दो-तीन-चार। बारह सौ चौंतीस कहो तो लगता है न जाने कितना भारी नम्बर है।'

'अगले दिन से ही मैं बारह सौ चौंतीस नम्बर की गाड़ी की तलाश में लग गया। अथार्टी से मुझे विभिन्न सीरीज की बारह सौ चौंतीस नम्बर की सभी गाड़ियों के बारे में जानकारी हासिल हो गई। जांच करने पर मुझे मालूम हुआ कि इस नम्बर की गाड़ियों में केवल श्रेहन ही एक ऐसा व्यक्ति था जो उस रात अपने किसी मित्र को एयरपोर्ट पर छोड़ने गया था।

सो श्रेहन को चैक करने के इरादे से मैं आज यहां आ गया। यहां आने पर मालूम हुआ कि श्रेहन की किसी ने हत्या कर दी है। यह भी मालूम हुआ कि जिस व्यक्ति को सन्देह में पकड़ा गया है उसे पुलिस स्टेशन ले जाकर छोड़ दिया गया है। मैं उस व्यक्ति की यानी तुम्हारी तलाश में यहां रुक गया। अचानक अन्धेरा होने के बाद मुझे खबर लगी कि श्रेहन हाउस में एक और कत्ल हो गया है। मैं वहां पहुंचा और भीड़ में शामिल हो गया। उसी समय मैंने तुम्हें श्रेहन हाउस में घुसकर इंस्पेक्टर से मिलते देखा। तुम्हें देखते ही सारी बात अपने आप साफ हो गई और मैं समझ गया कि हीरे तुम्हारे कब्जे में ही हैं।'

मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है मलखान दादा, तुम जो कुछ भी समझे गलत समझे।' उसकी बात समाप्त होने पर मैंने कहा—'जिन हीरों की तलाश में तुम आए हो, उनसे मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं, न उनके बारे में मुझे और गनेशी को कोई जानकारी ही है।'

'बेकार की बकवास करने के मूड में मैं नहीं हूं। मुझे मेरे

हीरे चाहिए।'

'लेकिन मैं कहां से लाकर दूं।'

'जहां तुमने छिपाए हैं।'

'फिर वही मुर्गे की टांग।' मैं दोनों गिलासों में व्हिस्की डालता हुआ बोला—'जब मुझे उनके बारे में कुछ मालूम ही नहीं है तो मैं छिपाऊंगा कहां?'

'देखो प्रिंस, मैं शराफत से तुम्हें बता रहा हूं कि मलखान यमराज के जबाड़े से भी अपना माल वापिस छीन लेने का दम रखता है। फिर तुम दोनों तो हो क्या चीज। तुम क्या हो, यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं। तुम्हारा जगत मोहन से सम्बन्धित होना ही इस बात की गवाही है कि मामला हीरे-जवाहरातों का ही है। बशेशर मेरे यहां से जगत मोहन की कार में बैठकर भागा। इस बात का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है कि बशेशर की लाश जगत मोहन की कोठी के बगीचे में पाई गई है।'

'हो सकता है कि तुम्हारी जगह मैं होता तो शायद इन हालात में यही सोचता किन्तु असलियत कुछ और ही है।'

'यह ठीक कह रहा है मलखान दादा।' गनेशी बोला—'हम लोगों का हीरों से कुछ लेना-देना नहीं। हम लोग तो किसी और चक्कर मे थे।'

मलखान ने प्रश्नपूर्ण दृष्टि से देखा।

उसे बताया गया कि किस तरह चन्द्रहार चुराने के चक्कर में मैं इस मामले में उलझ गया।

'अगर उस एक्सीडेन्ट में गनेशी की टांग न टूट गई होती तो इस वक्त मैं शायद तुम्हें भरतपुर में नजर भी न आता।' अन्त में मैंने कहा—'गनेशी खुद ही उस काम को अन्जाम देता। किन्तु अब जगत मोहन की हत्या हो जाने से हमारा चन्द्रहार वाला प्रोग्राम भी ठप्प हो गया है।'

'हो सकता है कि तुम ठीक कह रहे हो। लेकिन इस बात में तो कोई शक नहीं कि हीरे लेकर बशेशर जगत मोहन की कार में बैठा था और अब कहानी यूं बनती है कि हीरों की खातिर जगत मोहन ने बशेशर को कत्ल कर दिया। जिसका सबूत है उसकी लाश और जगत मोहन से हीरे लेने की खातिर किसी ने उसका कत्ल कर दिया।'

'हो सकता है ऐसा ही हुआ हो।'

'हो नहीं सकता बल्कि ऐसा हुआ है।' मलखान अपने शब्दों पर जोर देता हुआ बोला—'और यह काम तुम दोनों ने ही किया है।'

'तुम फिर बेकार···।'

'मिसेज ब्रेहन का बयान भी इस बात की पुष्टि करता है।' मलखान मेरी बात को काटता हुआ बोला—'उसने तो नकाबपोशों को देखा था जो ब्रेहन से कुछ मांग रहे थे। तुम भी दो आदमी हो।

'यह गनेशी चारपाई से नीचे तो उतर नहीं सकता।'

'शायद अब न उतर सकता हो। लेकिन तब उतर सकता था—जब नकाब पहनकर ब्रेहन हाऊस में गया था। वहां से लौटने के बाद फांसी के फंदे से बचने के लिए अपनी टांग तोड़ लेना कोई बड़ी बात नहीं है। इन सारी चालाकियों को मैं अच्छी तरह समझता हूं।'

'तुम कुछ नहीं समझ रहे सिर्फ अपना ही राग अलापे चले जा रहे हो।' मैंने झुंझलाकर कहा—'सब-कुछ सच बताने के बावजूद भी अगर तुम्हें यकीन नहीं आता तो हम क्या कर सकते हैं।'

'मेरे हीरे मुझे वापिस कर सकते हो ?'

'तुम्हें हमारे पास कहीं हीरे नजर आते हों तो ले लो।'

'वे तो मैं लेकर रहूंगा।' मलखान शान्त स्वर में बोला—'फिलहाल तुम्हें कल तक का टाइम देता हूं मैं। अगर कल इस वक्त तक मेरे हीरे मुझे नहीं मिले तो तुम्हारे साथी की टांग चाहे फर्स्ट ही टूटी हो किन्तु इसकी गर्दन मैं तोड़ दूंगा। उसके बाद तुम्हारा जो हाल होगा, उसकी शायद तुम कल्पना भी नहीं कर सकते।'

फिर वह उठकर दरवाजे की ओर मुड़ गया और वहां रुककर उसने एक बार फिर बड़े ही खतरनाक अन्दाज में कहा—'कल इस वक्त तक मेरे हीरे मुझे मिल जाने चाहिए।'

▭ ▭

मलखान के जाने के बाद कुछ देर तक तो वहां सन्नाटा छाया रहा। मलखान की एंट्री ने सारे ड्रामे को एक बिलकुल नया ही रूप दे दिया था और मैं उसे समझने की कोशिश कर

रहा था।

'यह मलखान हीरों का कौन-सा चक्कर लेकर आ गया ?' गनेशी ने बेचैनी से पहलू बदलते हुए कहा।

'मलखान की कहानी को नकारा तो नहीं जा सकता।' मैंने एक ही सांस में अपना गिलास खाली करने के बाद एक नई सिगरेट सुलगाते हुए कहा—'बशेशर की लाश को भी उसने पहचान लिया है ? लाश का ग्रेहन हाऊस में पाया जाना इस बात का सबूत भी हो सकता है कि जगत ग्रेहन और बशेशर के आपस में कुछ न कुछ सम्बन्ध तो थे ही।'

फिर जैसे ही मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा तो मैं एकदम उत्तेजित-से स्वर में बोला—'मुझे लगता है गनेशी कि मलखान की बात में दम है।'

'वह कैसे ?'

'डॉक्टर ने अपना अनुमान व्यक्त किया है कि इस आदमी को मरे अड़तालीस घंटे के करीब हो चुके हैं।'

'तो ?'

'किस्सा साफ है, बशेशर ने हीरों की खातिर मलखान को जहर देकर मार देना चाहा। हीरों की खातिर जगत ग्रेहन ने बशेशर की हत्या कर दी और उन्हीं के कारण जगत ग्रेहन को भी किसी ने मार दिया।'

'मगर किसने ?'

'कोई भी हो सकता है।' मैं अपने गिलास में व्हिस्की डालता हुआ बोला—'शायद जय ने ही यह काम कर दिया हो।'

'लेकिन मिसेज ग्रेहन का वह नकाबपोशों वाला बयान ?' गनेशी बोला—'अगर जय ने यह काम किया है तो जाहिर है उसके साथ कुछ और आदमी भी होने चाहिए। कम-से-कम एक तो होना ही चाहिए जो उसका साथी नकाबपोश बना हो ?'

'सहयोगी तो वह लड़की भी हो सकती है जिसके पीछे जय को मैंने भागते देखा था।' मैंने कहा—'हो सकता है कि उस समय वे लोग अपना काम निबटाकर ही भाग रहे हों।'

'लेकिन अगर जय ने यह काम किया है तो उसने लगे हाथ मिसेज ग्रेहन को भी अपने बाप के साथ क्यों न

निबटा दिया। आखिर वह उसकी सौतेली मां ही तो है। तब हीरों के साथ-साथ वह समस्त सम्पत्ति का मालिक भी बन जाता ?'

'शायद ऐसा उसने इसलिए न किया हो कि दोनों को एक साथ मारने से सीधा शक उस पर ही जाता।' मैंने सिगरेट को उंगलियों में घुमाते हुए कहा—'लेकिन न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है कि मिसेज ब्रेहन की वह नकाबपोशों वाली कहानी गढ़ी हुई है।'

'वह कहानी गढ़ी हुई है तो उसके हाथ-पैर किसने बांधे ?' गनेशी ने तर्क किया—'अवश्य ही इस काम में उसका कोई सहयोगी भी होना चाहिए।'

'मेरे ख्याल में जय तो उसका सहयोगी हो नहीं सकता। वह नौकरानी सुलोचना या फिर···वह लड़की···उसकी भतीजी मानती···वह शायद उसकी सहयोगी हो।'

'लेकिन तुम तो बता रहे थे कि वह तुम्हारे सामने काठ-मांडू से यहां पहुंची थी। फिर वह सहयोगी कैसे हो सकती है ?'

'उसके कहने से क्या होता है ? यूं तो जय भी कह रहा था कि वह सुबह ही शहर से यहां पहुंचा है जबकि कल आधी रात को उसे मैंने खुद देखा है।'

'इस बारे में जय का झूठ बोलना ही इस बात को साबित करता है कि असली अपराधी वही है।'

'शायद, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस मामले में रमला नाम की एक औरत का नाम भी आया है।'

'रमला वही न जिसका प्रेम-पत्र जगत ब्रेहन की जेब से बरामद हुआ था ?' गनेशी ने पूछा।

'बिलकुल वही।'

'लेकिन तुम तो कह रहे थे कि सब लोग ब्रेहन को इस मामले में बिलकुल पारसा बता रहे थे। वह कर्नल चोपड़ा और ब्रेहन का सैक्रेटरी राघवन···।'

'लेकिन यह जरूरी तो नहीं कि वह पारसा ही हो ? बहुत से लोग हैं जो इस तरह की दोहरी जिन्दगी जीते हैं।'

'शायद तुम ठीक कह रहे हो। अगर ब्रेहन के बशेशर जैसे आदमी के साथ सम्बन्ध थे तो जाहिर है कि वह दोहरी जिन्दगी

जी रहा था। लाओ जरा व्हिस्की डालो।'

गनेशी ने अपना गिलास मेरी ओर बढ़ा दिया।

मैंने उसके गिलास में व्हिस्की डालते हुए कहा—'मलखान के आ जाने से मामला इस बुरी तरह से उलझ गया है कि कुछ समझ में नहीं आ रहा।'

'मामला समझ में आए या न आए। लेकिन वह जो अपने हीरों की वापसी के लिए कल तक का समय दे गया है, उसका क्या होगा?'

'मतलब?'

'मतलब यही कि अगर उसे कल तक हीरे नहीं मिले तो वह हमें जिन्दा नहीं छोड़ेगा।'

'लेकिन जब हमारे पास हीरे हैं ही नहीं तो कहां से देंगे।'

'मगर मलखान है बहुत ही खतरनाक आदमी।'

शराब पीते हुए हम बातचीत करते रहे और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने की कोशिश करते रहे। लेकिन नशा चढ़ने के साथ-साथ हमारे विचार भी गड़बड़ाने लगे। कभी जय को अपराधी समझते तो कभी मिसेज श्रेहन को। फिर मालती पर शक जाता तो राधा देवी पर भी, जिसे भानु गुप्ता ने मिसेज कौशल के रूप में सम्बोधित किया था और साथ ही किसी कौशल मर्डर केस का भी जिक्र किया था।

हम तब तक बातें करते रहे जब तक कि नशे की अधिकता के कारण हमारी जबानें नहीं लड़खड़ाने लगीं।

उसके बाद थोड़ा-बहुत खाना खाकर हम दोनों ही सो गए।

▭ ▭

अगली सुबह के अखबार में जगत श्रेहन की हत्या की खबर छपी थी। खबर तो बहुत छोटी थी किन्तु उसके साथ प्रकाशित भानु गुप्ता का विशेष लेख काफी बड़ा था।

लेख का शीर्षक था—एक भूली दास्तान।

लिखा था—लगभग बीस साल पहले राज कौशल नामक एक व्यक्ति अपनी खूबसूरत पत्नी और एक छोटी दूध पीती बच्ची के साथ किसी सुदूर प्रान्त से दिल्ली में आया। मिस्टर कौशल ने यहां एक कपड़े की छोटी-सी दुकान खोली जिसे

शीघ्र ही दिल्ली की सबसे बड़ी और प्रसिद्ध कपड़े की दुकान बना लेने की उसकी आकांक्षा थी, इसलिए उसका अधिकतर समय दुकान पर ही बीतता था। जो बचता, वह उसकी पत्नी और बच्ची के लिए सुरक्षित था। दुकान और एक छोटा-सा घर, जो कि दिल्ली आने के बाद उसने एक सम्भ्रांत इलाके में किराए पर ले लिया था, बस यही मिस्टर कौशल की दुनिया थी। इसके अतिरिक्त एक महत्वाकांक्षी भी थी—जल्दी से जल्दी अमीर बनकर दुनिया के सारे सुख बटोर लेने की। जिसके लिए कमाना बहुत आवश्यक था, लिहाजा वह अपना ज्यादा से ज्यादा समय दुकान को ही देता था। दुकान और घर के अतिरिक्त उसकी गतिविधियां सीमित-सी ही थीं।

किन्तु इसके विपरीत उसकी पत्नी मिसेज राज कौशल न केवल एक सुन्दर स्त्री थी बल्कि वह जिन्दगी की तमाम खुशियों को अपने दामन में समेट लेने के लिए आतुर थी। उसने आते ही अपने आस-पास के सामाजिक हल्के में एक हलचल-सी पैदा कर दी। लोग न केवल उसकी सुन्दरता की प्रशंसा करते बल्कि उसके व्यवहार और सुरुचि सम्पन्न स्वभाव की भी प्रशंसा करते। यहां तक कि स्त्रियां तक उसके सम्मोहन से न बची रह सकीं। उसके साड़ी पहनने का ढंग, उसके मेकअप का ढंग, बाल बांधने का अन्दाज—एक-एक चीज फैशन का रूप लेने लगी। किसी भी चीज के बारे में उसकी राय को महत्व दिया जाता।

हालांकि दुकान से कोई खास आमदनी नहीं थी किन्तु कौशल परिवार के रहन-सहन को देखकर अन्य लोगों में यह विश्वास जम गया कि यह लोग निश्चित रूप से किसी रजवाड़े से ही सम्बन्धित होंगे।

कौशल परिवार के परिचितों में एक जवान वकील जयन्त कोठारी भी था जिसकी पत्नी कुछ महीने हुए एक ढाई-तीन वर्ष के पुत्र को छोड़कर मर गई थी। विधुर जयन्त का दिल मिसेज कौशल के आकर्षक सौंदर्य और व्यक्तित्व से उलझकर रह गया। मिसेज कौशल भी उसकी ओर कुछ अधिक ही मेहरबान रहतीं लेकिन वह मेहरबानी कभी भी शालीनता की सीमा को पार नहीं कर पाई। हालांकि आस-पास के लोगों को यह विश्वास हो गया था कि जयन्त मिसेज राज कौशल से प्रेम करने लगा

है किन्तु उन्हीं लोगों का यह भी कहना था कि मिसेज कौशल की अपने पति में पूर्ण निष्ठा थी।

कौशल परिवार को दिल्ली आए कुछ महीने बीत गए थे कि बम्बई की की एक कपड़ा मिल का मालिक एजेन्सी के बारे में मिस्टर कौशल से बातचीत करने के लिए दिल्ली आया। मिस्टर कौशल ने घर पर उसे खाना खिलाया और वह मिल-मालिक अरविन्द गुप्ता भी मिसेज कौशल के अद्वितीय रूप को देख घायल हो गया। हालांकि अपनी बातचीत के दौरान वह हमेशा एक सम्मानित दूरी बनाए रहा किन्तु दिल्ली में उसका आवश्यकता से अधिक निवास करना उसके दिल की छिपी इच्छाओं को प्रगट करने के लिए एक पर्याप्त कारण था।

इस बीच मिसेज कौशल ने अपने परिचितों के बीच अपने पति को लेकर चिन्ता व्यक्त करनी शुरू कर दी थी। उसका कहना था कि कुछ अज्ञात व्यक्ति घर के आस-पास चक्कर काटते रहते हैं और उसे खतरा है कि उसके पति की उन्नति से जलने वाले लोग कहीं उसे कुछ नुक्सान पहुंचाने की कोशिश न करें। उसका कहना था कि उसने अपने पति को सावधान करने की कोशिश भी की किन्तु उसने उसकी बात को कभी गम्भीरता से नहीं लिया।

फिर एक दिन वह भयानक घटना घटी। सुबह जब बर्तन मांजने वाली आई तो घर का बाहरी दरवाजा खुला हुआ था। वह भीतर घुसी तो उसे कमरे के भीतर से ऐसी आवाजें सुनाई दीं जैसे कोई चीखने का प्रयत्न करने के बावजूद भी चीख न पा रहा हो।

भीतर घुसी तो उसने वह भयानक दृश्य देखा। मिसेज कौशल के हाथ-पैर और मुंह बंधे हुए थे और वह अपनी नाक से बड़ी पीड़ादायक आवाजें निकाल रही थी। मिसेज कौशल बन्धनों से निकलने की कोशिश कर रही थी। क्योंकि बन्धन काफी ढीले हो चुके थे। पलंग पर मिस्टर कौशल की खून से लथपथ लाश पड़ी हुई थी और उसकी छाती में एक चाकू जड़ तक धंसा हुआ था।

मिसेज कौशल का बयान था कि रात में जब अचानक ही उसकी आंख खुली तो उसने दो नकाबपोशों को पलंग पर अपने पति के ऊपर झुका पाया। वह चीखना ही चाहती थी कि उन

दो नकाबपोशों में एक ने जो अपेक्षाकृत लम्बा था। झपटकर उसका मुंह बन्द कर दिया। वह इस बुरी तरह भयभीत हो गई थी कि विरोध करने की शक्ति भी नहीं बची थी उसमें। लम्बे नकाबपोश ने उसका मुंह बांधने के बाद हाथ-पैर भी मजबूती से बांधकर उसे फर्श पर डाल दिया। इस बीच दूसरा नकाबपोश जो अपेक्षाकृत ठिगना था, उसके पति की छाती पर चाकू ताने खड़ा रहा।

उसे बांधने के बाद लम्बा नकाबपोश फिर उसके पति के निकट पहुंचकर अपने साथ उसके पति को धमकाने लगा कि वह फौरन दिल्ली छोड़कर चला जाए। उसके पति के इन्कार से क्रोधित होकर ठिगने कद वाले नकाबपोश ने उसकी छाती में अपना चाकू उतार दिया।

उसके पति को मार करके वे दोनों नकाबपोश वहां से चले गये।

इस घटना की कई दिन तक अखबारों में चर्चा रही किन्तु पुलिस उन रहस्यमय नकाबपोशों का पता लगाने में असफल रही।

फिर जब अखबारों में यह खबर ठंडी पड़ने लगी तो पुलिस ने मिसेज कौशल को अपने पति की हत्या के अपराध में गिरफ्तार कर लिया।

इस मुकद्दमे ने समस्त जनता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। अभियुक्ता का अद्वितीय रूप एवं यौवन भी लोगों की दिलचस्पी का प्रमुख कारण था।

यह बात भी उभरकर सामने आई कि इन लोगों का किसी भी रजवाड़े अथवा रियासत से कोई सम्बन्ध नहीं था, बल्कि वह एक मामूली स्कूल मास्टर की बीवी थी। मुकद्दमे के दौरान सारी सच्चाईयां निर्ममता से उभर कर सामने आईं। हत्या का कारण अरविन्द गुप्ता को पाया गया। बम्बई के उस धनपति ने मुकद्दमे के दौरान मिसेज कौशल को बचाने के लिए पूरी कोशिश की। किन्तु अभियोग पक्ष के वकील की जोरदार जिरह के सामने अरविन्द गुप्ता को मानना पड़ा कि वह मिसेज कौशल से प्रेम करता था और अगर वह स्वतन्त्र होती तो शायद वह उससे विवाह भी कर लेता। इस स्वीकृति ने मिसेज कौशल के विरुद्ध मामला और भी मजबूत कर दिया कि उस शौकीन

मिजाज औरत ने उस धनपति मिल मालिक को अपने कब्जे में करने के लिए अपने पति को रास्ते से हटा दिया।

किन्तु मिसेज कौशल अन्तिम क्षण तक अपने को निर्दोष बताती रही। उसने शुरू में जो बयान दिया था, वह उस पर दृढ़ रही। अभियोग पक्ष के तेज-तर्रार वकील की तीखी जिरह भी उसके बयान में कोई अन्तर न ला सकी। वह इसी बात को बार-बार दोहराती रही कि वह निर्दोष है और कानून जब असली अपराधियों को पकड़ने में असफल रहा तो उसे जबर्दस्ती दोषी साबित करने की कोशिश की जा रही है। अधिकांश लोग उसकी बात पर विश्वास करके उसे हालात की शिकार एक दुखियारी औरत मानने लगे थे।

लेकिन अभियोग पक्ष का वकील उसे दोषी साबित करने के लिए दृढ़-संकल्प था। उसने नकाबपोशों वाली बात को एक मनगढ़न्त कहानी बताते हुए यह साबित करने की कोशिश की हत्या की यह साजिश मिसेज कौशल और उसके प्रेमी जयन्त कोठारी के बीच रची गई थी। मिसेज कौशल के उकसाने पर जयन्त कोठारी ने ही वह प्राणघातक वार किया था—जिससे मिस्टर कौशल की मृत्यु हुई।

जयन्त कोठारी की गिरफ्तारी के लिए एक वारन्ट जारी किया गया किन्तु वह तब तक फरार हो चुका था।

सरकारी वकील ने तथ्यों के आधार पर यह भी साबित करने की कोशिश की, मिसेज कौशल के बन्धन इतने ढीले बंधे हुए थे कि वह उनसे अपने आपको बड़े आराम से आजाद कर सकती थी, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया।

तब जबकि मुकद्दमा अपने अन्तिम दौर से गुजर रहा था, अदालत को एक पत्र मिला जोकि दिल्ली से ही पोस्ट किया गया था। यह पत्र जयन्त कोठारी की ओर से भेजा गया था जिसमें उसने अपना कोई भी अता-पता दिए बिना अपने अपराध को स्वीकार किया था। उसने उस पत्र द्वारा स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया था कि मिसेज कौशल के उकसाने पर उसने ही उसके पति की हत्या की है। हत्या का षड्यन्त्र भी उन लोगों के बीच रचा गया था। उसे विश्वास था कि उसका पति उसके साथ दुर्व्यवहार करता है, इसलिए वह अपनी प्रेमिका को उस नारकीय जीवन से मुक्ति दिलाकर सदा के लिए अपनी बना